卐 ॐ 卐

- पञ्चम सत्र -

मानव संस्कृति का प्रतीकात्मक स्वरूप

चतुर्थ सत्र में सृष्टि सृजन प्रक्रिया की चर्चा करते समय अव्यक्त परमात्मा एवम् परमात्म शक्तियों के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा गया है तथा लगभग पिंछले सभी सत्रों में प्रतीकों के महत्व तथा उनके निर्माण एवम् खोज के सम्बन्ध में भी चर्चा की गयी है। इस अति महत्वपूर्ण विषय पर कुछ खास-खास प्रतीकों के सम्बन्ध में विस्तार से वर्णन करने से पूर्व यह पुनः बतला देना आवश्यक है, कि वैदिक धर्म के गूढ़ एवम् विशाल ज्ञान को अति सरल बनाने तथा उसे पीढ़ी-दर पीढ़ी सुरक्षित बनाए रखने हेतु प्रतीकों की भाषा में लेखन भारतीय मनीषियों की श्रेष्ठ सोच का द्योतक है। किसी व्यक्ति का चित्र अथवा मूर्ति वस्तुतः वह व्यक्ति तो नहीं है, परन्तु श्रेष्ठ चित्रकार द्वारा निर्मित उस व्यक्ति के चेहरे से उसका व्यक्तित्व तथा बहुत-सी मानसिकता दर्शाए जाने का यह एक उत्तम साधन तो है ही।

प्रतीक रचना के आधार :-

ऋषियों ने सृष्टि रचना का आधार प्रवृत्ति मूलक पाया, अतएव प्रकृति में उपलब्ध सूक्ष्म शक्तियों का प्रतीकीकरण प्रवृत्तियों (Tendencies) के आधार पर किया। मान लीजिए, कि न्यूट्रॉन कण की प्रवृत्ति को दर्शाना है, तो उसके व्यवहार का गहरायी से अध्ययन करना होगा। जैसे - न्यूट्रॉन कण में सम (±) आवेश (charge) होता है। बाह्य जगत का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, अतएव इस प्रवृत्ति को मानवीकृत प्रतीक के रूप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है, कि वह मानव गर्मी-सर्दी, मान-अपमान, दुःख-सुख सभी मनोभावों से ऊपर है अर्थात् वह शिव (शव+इव=शव जैसा) गुणों वाला है। क्योंकि आकाश गंगा के बाह्य भाग में अति तप्त तारे हैं अतएव अनुलोम विलोम सिद्धान्त के अनुसार केन्द्रीय स्तम्भ वर्फ से ढका होना चाहिए। इसीलिए 'शिव' को हिमाच्छादित कैलाश पर्वत पर बैठे दर्शाया गया है। यहाँ पर एक मुख्य विचारणीय प्रश्न और है, कि न्यूट्रॉन कण समूहों का मानवीकरण करके उसे भगवान की पदवी क्यों प्रदान की गयी? विराट पुरुष (आकाशगंगा) में स्थित ***न्यूट्रॉन तारों से निर्मित एक लाख प्रकाश वर्ष लम्बा ज्योतिर्मय स्तम्भ मात्र जड़ न्यूट्रॉन तारों से नहीं बना है,*** अपितु उस स्तम्भ के पीछे अव्यक्त चेतन बल कार्य कर रहा है, जो हमारी पृथ्वी के ही नहीं अपितु पूरे आकाशगंगा के प्राणियों के जीवन को नियंत्रित करता है। इसीलिए न्यूट्रॉन तारा समूह से बने इस स्तम्भ को ज्योतिर्लिंग के रूप में भगवान (शिव) का दर्जा दिया गया है तथा उसकी पूजा-अर्चना की जाती है।

ऋषियों ने प्रतीकों को आधार बनाकर अत्यन्त विस्तृत एवम् रोचक साहित्य का सृजन किया है। कदाचित् प्रतीकों का विश्लेषणात्मक साहित्य भूतकाल में रहा होगा, जो लगता है, कि काल की गति से लुप्त हो गया है, अतएव प्रतीकों के विश्लेषणात्मक साहित्य के लेखन हेतु आज एक अलग महाग्रंथ लिखने की आवश्यकता है [a]। उन मनीषियों ने प्रतीकों में अपार

---

a प्रतीकों में विज्ञान पर कुछ अधिक जानकारी हेतु निम्न छह लेख पुस्तक के भाग-3 में दिए गये हैं। *(i) मानव धर्म का आधार गायत्री मंत्र (ii) प्रतीक विज्ञान (iii) मूर्तिपूजा-एक वैज्ञानिक मीमांसा (iv) उपास्य देवों की वैज्ञानिक व्याख्या (v) गो-मातृभूमि का प्रतीक (vi) गंगा-आकाशगंगा का प्रतीक।*

ज्ञान पिरो दिया है। इस सत्र में विशिष्ट प्रवृत्तियों पर आधारित कुछ खास-खास प्रतीकों एवम् जिन सिद्धान्तों पर उन प्रतीकों की कल्पना की गयी है, का खुलासा (decoding) करने का प्रयास किया गया है। क्योंकि इस प्रकार के खुलासा (decoding) का कोई अधिकारिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं है, अतएव वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर तर्कसम्मत अनुमान को ही विश्लेषण का आधार बनाया गया है।

1. ब्रह्मा :- ब्रह्मा जी ब्रह्मलोक में स्थित अव्यक्त चैतन्य सृजनात्मक बल के मानवीकृत स्वरूप हैं। इनके चार मुख हैं। ये विष्णु जी से कमलनाल द्वारा जुड़े हुए कमल पर विराजमान हैं। इनके चार हाथों में चार वेद हैं तथा इन्हें सृष्टि का रचयिता कहा गया है। हंस उनका वाहन है।

उपरोक्त प्रतीक रचना परमाणु रचना के समानान्तर **'यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'** सिद्धान्त अर्थात् जो कुछ सूक्ष्म जगत (Micro) में हो रहा है, वैसा ही विराट (Macro) में भी होता है, पर आधारित है। मानव पिण्ड के अन्तर में अरबों परमाणु कार्य करते हैं तथा वही मानव शरीर (पिण्ड) की सूक्ष्मतम इकाई भी हैं, अतएव आकाशगंगा में स्थित देव शक्तियों के मानवीकृत प्रतीकों की तुलना परमाणु (Atom) के विभिन्न अवयवों से की गयी है।

परमाणु रचना में एलेक्ट्रॉन कण ऋण (-) आवेश के कारण नाभि में स्थित प्रोटॉन कण के धन (+) आवेश से खिंचा हुआ नाभि के चारों ओर 600 मील प्रति सेकंड[a] की गति से सतत गतिमान रहता है। इसी प्रकार आकाशगंगा के बाह्य घेरों में हमारे सूर्य समेत स्थित एक खरब से भी अधिक सूर्य केन्द्र की सतत परिक्रमा करते रहते हैं। हमारा सूर्य 225 किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से भ्रमण करता हुआ केन्द्र की एक परिक्रमा 22½ करोड़ वर्ष में पूरी करता है। ये सभी सूर्य ब्रह्मा कहलाते हैं, क्योंकि इनमें सृजनात्मक बल निवास करता है। इसी कारण ब्रह्मा, जो सतत चारों ओर घूमता है, के चार मुख दर्शाए गये हैं।

विष्णु जी से संयुक्त कमल पर विराजमान ब्रह्मा जी

चित्र : 5.01

ऋषियों ने किसी भी वस्तु अथवा व्यक्ति का नामकरण इस प्रकार किया है, कि जिससे उसके नाम में उसकी प्रवृत्ति अथवा गुणों का अधिक से अधिक समावेश हो। अतएव ब्रह्मा वह अव्यक्त चेतनबल है, जो ब्रह्म की सतत आवृत्ति (परिक्रमा) करता हो (ब्रह्मा = ब्रह्म + आवृत्ति)।

परमाणु का प्रोटॉन कण दस एलेक्ट्रॉन वोल्ट की धन (+) चिद्युत शक्ति से एलेक्ट्रॉन को आकृष्ट किए हुए उसे सतत अपने पथ (Orbit) पर बनाए रखता है। इसी को कमलनाल

---

a On the other hand, they respond to their confinement by whirling around, and the tighter they are bound to the nucleus, the higher their velocity will be; in fact, the confinement of electrons in an atom results in enormous velocities of ***about 600 miles per second.*** These high velocities make the atom appear as a rigid sphere. *(Page-80 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)*

से दर्शाया गया है। कमलनाल मुड़ सकती है तथा टूट भी सकती है। यह विष्णु जी की नाभि से जुड़ी है। एलेक्ट्रॉन का भार बहुत ही अल्प (9.11×10^{-31} Kg.) है, अतएव इन्हें कमल पर विराजमान दिखलाया गया है। कमल हल्केपन एवम् कोमलता का प्रतीक है।

सृष्टि रचना के लिए उस विद्या का ज्ञान आवश्यक है तथा वेद सम्पूर्ण ज्ञान के प्रतीक हैं, अतएव ब्रह्माजी के चारों हाथों में चारों वेद दर्शाए गये हैं। क्योंकि हमारे सूर्य (ब्रह्मा) से सम्पूर्ण सौरमण्डल की उत्पत्ति हुई है, अतः ब्रह्मा जी जगत के रचयिता हैं।

पदार्थ जगत की रचना भी एलेक्ट्रॉन के बिना सम्भव नहीं है। प्रत्येक पदार्थ में एलेक्ट्रॉन का प्रथम स्थान है। आधुनिक युग के एलेक्ट्रॉनिक गुड्स तो एलेक्ट्रॉन के प्रथम नाम से ही प्रसिद्ध हैं।

मानव के मणिपुर चक्र में एलेक्ट्रॉन अपने पथ के बाह्य घेरों में भ्रमण करता है, तब विचारों का प्रवाह तीव्रता से होता है अर्थात् तब मन कार्य कर रहा होता है। विराट में यही कार्य चन्द्रमा करता है अर्थात् चन्द्रमा ब्रह्म का मन है और इस प्रकार चन्द्रमा सभी मानवों के मनों का नियंत्रण करता है। लेकिन जब यही एलेक्ट्रॉन आज्ञा चक्र के अन्तर पथों पर भ्रमण करता है तब निर्णय करने की शक्ति का उदय होता है। इसी प्रकार सूर्य (ब्रह्मा) आकाशगंगा के अन्तर घेरों में भ्रमण करते हैं, अतएव ब्रह्मा जी **'अव्यक्त ब्रह्म'** की **'बुद्धि'** का कार्य करते हैं अर्थात् पृथ्वी पर निवास करने वाले मानवों की बुद्धि को ब्रह्मा जी नियंत्रित करते हैं। इस सम्बन्ध में ज्योतिष शास्त्र से अधिक जानकारी मिल सकती है।

• **ब्रह्मा - विज्ञान के शब्दों में** :- ब्रह्मलोक (आकाशगंगा के बाह्य घेरों) में स्थित ऋण (-) आवेश से आवेशित एलेक्ट्रॉन तारा समूह (सूर्यों) में व्याप्त सृजनकारी अव्यक्त चेतनबल के मानवीकृत स्वरूप ब्रह्मा हैं। ये ब्रह्मा आकाशगंगा के केन्द्र की सतत परिक्रमा करते रहते हैं तथा इन सूर्यों (ब्रह्माओं) से अनेकानेक भूमण्डलों का सृजन हुआ है। ये सभी सूर्य प्रोटॉन तारामण्डल (विष्णु लोक) धन (+) आवेश (charge) से आकृष्ट रहते हुए अपनी कक्षा में भ्रमण करते हैं। ब्रह्मा मानवों की बुद्धि पर नियंत्रण रखते हैं।

• **वाहन हंस** :- श्री ब्रह्मा जी यदा-कदा अपने भक्तों को वरदान देने जाते समय अपने वाहन हंस का प्रयोग करते हैं, जो विवेक शक्ति का प्रतीक है, क्योंकि ऐसी मान्यता है, कि हंस दूध मिले पानी को अलग-थलग करके दूध-दूध पी लेता है अर्थात् ब्रह्मा जी आवश्यकतानुसार भक्तों को वरदान देते समय तथा सृष्टि रचना करते समय अपनी विवेक शक्ति का प्रयोग भी करते हैं।

श्री सरस्वती जी

चित्र : 5.01(a)

• **सरस्वती** :- इन्हें ब्रह्मा जी की पत्नी के नाम से जाना जाता है। ये ज्ञान की देवी हैं। सृष्टि रचना में ज्ञान की देवी का पूरक (complementary) का रोल है। प्रकृति के

नियमानुसार एलेक्ट्रॉन का प्रतिकण पॉज़ीट्रोन है, जो धन (+) चार्ज से आवेशित है। अतः पॉज़ीट्रोन कण सरस्वती शक्ति को धारण करता है। सरस्वती जी का ध्यान एवम् पूजन करने से विद्या एवम् ज्ञान की प्राप्ति होती है।

2. विष्णु :- भगवान विष्णु की दो प्रकार की मूर्तियाँ प्राप्य हैं। पहली मूर्ति एक सहस्र नागों से निर्मित शेषशय्या पर अधखुले नेत्रों की लेटी मुद्रा में है तथा पैरों की ओर श्रीलक्ष्मी जी बैठीं चरण चाप रही हैं। यह शेषशय्या क्षीर (दूध) के सागर में स्थित है। तो दूसरी मूर्ति सावधान मुद्रा में खड़ी है तथा उसके चारों हाथों में क्रमशः शंख, चक्र, गदा एवम् पद्म धारण किए दर्शाए गये हैं। उनका वाहन गरुड़ है। वे बैकुण्ठ लोक में निवास करते हैं, जहाँ का दृश्य अत्यन्त मनोहारी है। यहाँ पर चारों ओर नीला प्रकाश झिलमिला रहा है। भगवान विष्णु मुक्ति तथा कर्मफल प्रदाता हैं। वे दुष्टों का विनाश करने हेतु पृथ्वी पर अवतार भी धारण करते हैं।

ब्रह्माजी की भाँति इस प्रतीक की रचना भी परमाणु रचना के समानान्तर है। परमाणु की नाभि में ***'एक करोड़ एलेक्ट्रॉन' 'वोल्ट'*** का विद्युत बल[a] विद्यमान रहता है, अतएव सहस्रों फन वाले नागों से निर्मित शय्या करोड़ो एलेक्ट्रॉन वोल्ट्स के विद्युतबल का प्रतीक है। क्योंकि सर्प की गति तथा विद्युत की गति समान है अर्थात् दोनों की गति में Sine Wave (∿∿∿) बनती है अतः नाग (सर्प) विद्युत का प्रतीक है। चूँकि भगवान विष्णु कर्मफल तथा मुक्ति प्रदाता हैं, अतः इतने बड़े विद्युत बल से वे पृथ्वी पर के सभी प्राणियों की जानकारी अपने कम्प्यूटर में संजोकर रखते हैं और उसी के आधार पर मानव द्वारा किए गये कर्मों का सटीक फल भी देते हैं। जब मानवों का अवचेतन मन राग अथवा द्वेष से शून्य हो जाता है तब उसे मुक्ति प्रदान करके अपने बैकुण्ठ लोक में स्थान दे देते हैं। परमाणु के एलेक्ट्रॉन का जब नाभि में विलय हो जाता है, तब वह स्थिति समाधि की स्थिति होती है। मृत्यु पर्यन्त ऐसी स्थिति के अभ्यास से साधक की मृत्यु के पश्चात् मुक्ति की प्राप्ति की अवस्था सम्भव है।

मानव की हर कोशिका के डी.एन.ए. में जीवन की वे घटनाएं सतत् रिकॉर्ड होती रहती हैं, जिन घटनाओं के साथ राग/द्वेष अर्थात् मन जुड़ा होता है। इन सभी घटनाओं की स्मृतियाँ (Memories) क्रोमोज़ोम पर जीन के रूप में जैव विद्युत द्वारा एक विशिष्ट शैली में सतत् लिखी जाती हैं। इन सब सूचनाओं (Informations) का समायोजन (Co-ordination) पश्चात् मस्तिष्क (Posterior Part of CEREBRUM) में स्थित एक 'आल्फा' प्लेट द्वारा किया जाता है, जिसे भारतीयों ने 'चित्रगुप्त'--यमराज के लेखाकार (अवचेतन मन) कहा है। मानव का अवचेतन मन तथा विराट के विष्णु का कम्प्यूटर विद्युत स्पन्दनों द्वारा जुड़ा रहता है। इस प्रकार विष्णु (Super Computer) द्वारा किए गये सटीक निर्णय मानव कम्प्यूटर तक सतत पहुँचते रहते हैं तथा मानव को चार प्रकार के कर्मफलों को विवश होकर भोगना पड़ता है।

मानव की हर कोशिका में लिसलिसा पदार्थ होता है, जहाँ पर डी.एन.ए. स्थित रहता है और डी.एन.ए. में सतत लेखन होता रहता है। यही लिसलिसा पदार्थ विराट में

---

a The strong interactions hold the protons and neutrons to-gether in the atomic nucleus.....with energies of about ***'ten million units'.***

(Page-253 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)

क्षीर (दूध) का सागर कहा गया लगता है। अधखुले नेत्रों का अर्थ है, कि जैसे प्रोटॉन अपनी धुरी पर 40,000 मील प्रति सेकंड [a] की गति से सतत घूर्णन करता रहता है; उसी प्रकार प्रोटॉन तारामण्डल भी तीव्र गति से घूर्णन करता है, अतएव वह सोया-सोया सा लगता है।

इसी प्रकार प्रोटॉन तारा समूह भी अपनी धुरी पर तीव्र गति से घूर्णन करते हैं, इसीलिए भगवान विष्णु सोये-सोये से दर्शाये गये हैं। तथापि इन तारा समूहों की पृष्ठभूमि में छुपा चैतन्य विष्णु बल धन (+) आवेश (charge) बहुत ही सजग तथा सचेष्ट है। इस प्रकार वह विष्णु बल मानवों के कर्मों के लेखा-जोखा लिखने में कभी भी प्रमाद नहीं होने देता। यह बल अपने धन (+) आवेश के कारण ब्रह्मलोक में स्थित परिक्रमा करते सूर्यों को आकृष्ट रखते हुए उन्हें अपने परिक्रमा पथ पर बनाए रखता है।

सावधान मुद्रा में श्री विष्णु भगवान

चित्र : 5.02

• **भगवान विष्णु की खड़ी मूर्ति** :- क्योंकि विष्णु बल कर्मफल प्रदाता है, अतएव उनके इस विग्रह के चार हाथों में - दुष्टों एवम् पापियों को सावधान करने हेतु ***'शंख'***, उनको दण्ड देने हेतु ***'गदा'***, उनका वध करने हेतु ***'चक्र'*** तथा भक्तों को राग-द्वेष रहित जीवन का संदेश देने हेतु ***'पद्म'*** धारण किए हुए दर्शाए गये हैं। प्रोटॉन में क्वार्कों का समायोजन भी है, अतः विष्णु जी के चार हाथ बतलाए गये हैं। प्रकृति के नियमों के विरुद्ध कार्यों के होने से जब पृथ्वी पर पाप बहुत बढ़ जाता है तब विष्णु बल किसी न किसी रूप में पृथ्वी पर अवतरित होकर दुष्टों का संहार कर देता है तत्पश्चात् प्राकृतिक नियमों की पुनर्स्थापना होती है।

• **श्री गरुड़** : कष्ट में पड़े भक्तों की रक्षा करने के लिए जाते समय भगवान विष्णु गरुड़ जैसे तीव्र गति के वाहन का प्रयोग करते हैं। श्री गरुड़ जी अपने स्वामी को वायु वेग से भक्त के पास ले जाते हैं। वे श्रीराम एवम् श्री लखन लाल को नागपाश से मुक्त भी कर देते हैं।

• **श्री लक्ष्मी जी** : श्री लक्ष्मी जी समुद्र की पुत्री हैं। समुद्र रत्नों की खान (रत्नाकर) है। स्त्री रूपी लक्ष्मी श्रेष्ठ रत्न है, जो समुद्र ने श्री विष्णु जी को अर्पित की हैं। लक्ष्मी द्वारा चरणों की सेवा का अर्थ है, कि भगवान विष्णु के प्रसन्न होने पर भक्त को लक्ष्मी जी की कृपा सरलता

---

a Being of the same quantum nature as electrons, the 'nucleon' – as the ***protons*** and ***neutrons*** are often called – respond to their confinement with high velocities, and since they are squeezed into a much smaller volume, their reaction is all the more violent. ***They race about in the nucleus with velocities of about 40,000 miles per second.***

(Page-84 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)

से प्राप्त हो जाती है। प्रकृति का नियम है, कि हर कण का प्रतिकण अवश्य होता है। अतः प्रोटॉन कण का प्रतिकण (Anti Proton) ऋण (–) आवेश से आवेशित लक्ष्मी शक्ति को धारण करता हैं। लक्ष्मी जी का ध्यान तथा पूजन करने से धन की प्राप्ति होती है। विष्णु बल का सभी जीवात्माओं की पालना करने का कार्य है। पालना करने में धन की परम आवश्यकता होती है, अतएव विष्णु बल के कार्य में सहयोग करने का लक्ष्मी जी का पूरक (Complementary) का रोल है।

श्री लक्ष्मी जी

चित्र : 5.02(a)

संस्कृत में विष् धातु का अर्थ होता है विस्तार करना, सृजन करना, फैलाना। विष्णु = विष्+अणु अर्थात् ऐसा अणु जिसकी प्रवृत्ति सृजन करने की हो। पूरी सृष्टि में जो फैलाव अथवा सृजन हो रहा है, वह एलेक्ट्रॉन एवम् प्रोटॉन कणों के संयुक्त प्रभाव से होता है। वस्तुतः एलेक्ट्रॉन कण को नाभि में स्थित नाभिकीय बल तथा प्रोटॉन कण से कार्य करने की शक्ति मिलती है। इस प्रकार यह नाम उस प्रोटॉन कण की प्रवृत्ति को दर्शाता है, जो वास्तव में बल का उद्गम है।

प्रोटॉन तारा समूहों के नीले प्रकाश की झिलमिलाहट से पूरा बैकुण्ठ लोक आलोकित रहता है। जहाँ पर करोड़ों एलेक्ट्रॉन वोल्ट्स की विद्युत शक्ति उपलब्ध हो, जहाँ पर लक्ष्मी का निवास हो वहाँ के सौन्दर्य, सम्पदा तथा मनोहारी होने में संशय ही कहाँ हो सकता है। यह कल्पना चित्र साहित्यिकी है। आकाशगंगा का यह क्षेत्र केन्द्र से संलग्न है तथा सबसे शक्तिशाली भी है। श्री विष्णु जी ब्रह्म के चित्त (अवचेतन) हैं, अतएव विष्णु बल पृथ्वी पर स्थित मानवों के अवचेतन मन को नियंत्रित करता है अर्थात् कर्मों का फलाफल का निर्णय करता है।

• **विष्णु - विज्ञान के शब्दों में :-** आकाशगंगा के केन्द्र स्तम्भ से संलग्न प्रथम तारा वृत्त धन (+) आवेश (Charge) से आवेशित प्रोटॉन तारा समूह में व्याप्त पालनकारी एवम् कर्मफल प्रदाता अव्यक्त चेतनबल के मानवीकृत स्वरूप विष्णु हैं। इस तारा समूह में स्थित विष्णुबल–'सुपर कम्प्यूटर (Super Computer)' कर्मों का लेखा-जोखा रिकार्ड करता है तथा फलाफल का निर्णय करता है। विष्णुबल मुक्ति प्रदाता भी है। ये तारे अति गर्म तारे हैं, अतः इनका रंग नीला है। विष्णुबल धन (+) आवेश से आवेशित होने के कारण एलेक्ट्रॉन तारा वृत्तों को आकृष्ट रखते हुए इनको अपने परिक्रमा पथ पर बनाए रखता है।

3. शिव :- भगवान शिव के विग्रह को सामान्यतया एकल रूप से हिमाच्छादित कैलाश पर्वत की चोटी पर विराजमान ध्यानावस्था में दर्शाया गया है। उनकी भाव भंगिमा शान्त है।

सिर पर श्री गंगा जी विराजमान हैं। सारे शरीर में सर्प लिपटे हुए हैं। माथे पर तीसरे नेत्र का चिह्न है। अधोवस्त्र में बाघम्बर पहिने हुए हैं।

दूसरे विग्रह में वे अपने परिवार पार्वती (दुर्गा), श्री गणेश, श्री कार्तिकेय तथा पूरे परिवार के वाहनों वृष, सिंह, मोर और चूहा एवम् वीरभद्र आदि गणों सहित दर्शाए गये हैं।

समाधिस्थ भगवान सदाशिव

चित्र : 5.03

उपरोक्त प्रतीक रचना 'जैसा सूक्ष्म जगत में है, वैसा ही विराट में भी है' (As the Microcosm, so the Macrocosm) के सिद्धान्त पर आधारित है।

परमाणु की नाभि में स्थित न्यूट्रॉन कण सम (±) आवेश से आवेशित हैं तथा प्रोटॉन कण के साथ एक करोड़ एलेक्ट्रॉन वोल्ट से जुड़े रहते हैं। इसी के समानान्तर आकाशगंगा के विष्णुलोक में स्थित प्रोटॉन तारा समूह केन्द्र में स्थित न्यूट्रॉन तारा समूह से करोड़ों-करोड़ों एलेक्ट्रॉन वोल्ट्स की विद्युत शक्ति से जुड़ा हुआ है। न्यूट्रॉन कण, प्रोटॉन कण के समान ही नाभि में 40,000 मील प्रति सेकंड [a] की गति से अपनी धुरी पर घूर्णन करते हैं। इसी के समानान्तर न्यूट्रॉन तारामण्डल प्रोटॉन तारामण्डल की भाँति ही अति तीव्र गति से अपनी धुरी पर घूर्णन कर रहे हैं, ऐसा माना जा सकता है। क्योंकि भगवान शिव को भगवान विष्णु की भाँति सूचनाओं की रिकार्डिंग का कार्य नहीं करना होता है, अतएव इतनी तीव्र गति से घूर्णन करते हुए न्यूट्रॉन तारामण्डल में स्थित अव्यक्त चेतन बल सम (±) आवेश (charge) भगवान शिव बन्द नेत्रों से ध्यान करते दर्शाए गये हैं। एलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन एवम् न्यूट्रॉन कणों में न्यूट्रॉन कण सबसे भारी (1.68×10^{-27} Kg.) है। इसी के समानान्तर आकाशगंगा के केन्द्रीय स्तम्भ का भार पूरी आकाशगंगा के भार का 2/3 के बराबर है। एक बात और, कि सम्पूर्ण ब्रह्मलोक में एक खरब सूर्य भीषण अग्नि से प्रज्वलित हैं, अतएव प्रकृति के ***'अनुलोम-विलोमता'*** सिद्धान्त के अनुसार आकाशगंगा का केन्द्रीय स्तम्भ पूरी तरह से बर्फ से ढका होना चाहिए। इन्हीं दोनों कारणों से लगता है, कि भगवान शिव को हिमाच्छादित कैलाश पर्वत पर बैठे दर्शाया गया है। आधुनिक

---

a Being of the same quantum nature as electrons, the 'nucleon' – as the ***protons*** and ***neutrons*** are often called – respond to their confinement with high velocities, and since they are squeezed into a much smaller volume, their reaction is all the more violent. ***They race about in the nucleus with velocities of about 40,000 miles per second.***

(Page-84 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)

विज्ञान के अनुसार धूमकेतु बर्फ से ढके हुए हैं, परन्तु केन्द्रीय स्तम्भ बर्फ से ढका है, इस पर वह मौन है। पर्वत भारीपन तथा मजबूती का प्रतीक है तथा इस अतिरिक्त भार के कारण यह स्तम्भ आकाशगंगा के विष्णुलोक तथा ब्रह्मलोक को सम्भाले हुए है[a]। इसी बात को प्रतीक रूप में भगवान शिव के मस्तक पर गंगा जी को विराजमान दर्शाया गया है, क्योंकि श्री गंगाजी आकाशगंगा की प्रतीक हैं[b]। इस 2/3 भार के कारण इस स्तम्भ में भारी मात्रा में स्थिर शक्ति (Potential Energy) का संचय है, अतएव पौराणिक भाषा में वे पर्वत से उत्पन्न पार्वती के पति हैं।

भगवान शिव के गले में मुण्डों की माला है, जो कल्प के अन्त में विनाश को प्राप्त हुई प्रकृति के कपालों की प्रतीक है। एलेक्ट्रॉन तारा समूह के विघटन के पश्चात् वे कृष्ण विवर (Black hole) बनकर कदाचित् स्तम्भ के चारों ओर क्रमशः लिपटते जाते हों, जब तक कि पूरी आकाशगंगा समाप्त होकर अदृश्य न हो जाती हो। इसी घटना को मुण्डों की माला कहा गया लगता है।

न्यूट्रॉन कण जब परमाणु से बाहर होता है, तब क्षीण बल (weak force) के प्रभाव से तीन टुकड़ों–'एलेक्ट्रॉन', 'प्रोटॉन' एवम् 'न्यूट्रीनो' में टूट जाता है, इसीलिए भगवान शंकर के शरीर पर क्षीणबल के प्रतीक रूप सर्प लिपटे दर्शाए गये हैं। सर्प की गति की प्रवृत्ति तथा शक्ति/बल की गति की प्रवृत्ति एक समान हैं अर्थात् गति करते हुए दोनों Sine Wave (∿∿∿) बनाते हैं, अतः सर्प क्षीण बल के प्रतीक हैं। सृष्टि के संहार का कार्य भगवान शिव अपनी चल शक्ति सम (±) आवेश भगवान रुद्र के माध्यम से करते हैं, जिनकी प्रतीक रूप से स्थिति मस्तक पर तीसरे नेत्र के रूप में दर्शायी गयी है। भगवान शिव का नंग-धड़ंग स्वरूप उनकी संसार के **'पदार्थ-जगत'** से सम्पूर्ण वैरागी मानसिकता को दर्शाता है। वे महेश्वर (महान ईश्वर=सर्वोच्च शासक) हैं, क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु एवम् रुद्र की उत्पत्ति उन्हीं से हुई है और इन्हीं शक्तियों के माध्यम से वे सृष्टि की रचना, पालना तथा संहार करते हैं, परन्तु स्वयम् प्रकट रूप से कुछ भी करते नहीं दिखलायी पड़ते। सृष्टि के आरम्भ में न्यूट्रॉन कणों में विस्फोट हुआ, उससे प्रोटॉन, एलेक्ट्रॉन तारामण्डलों की उत्पत्ति के साथ ही अन्तर्निहित रुद्र भगवान का भी जन्म हुआ। विज्ञान के शब्दों [c] में इस घटना को निम्न प्रकार से व्यक्त किया गया है -

न्यूट्रॉन ⟶ प्रोटॉन + एलेक्ट्रॉन + न्यूट्रीनो

$n \longrightarrow p + \bar{e} + \bar{\upsilon}$

शिव ⟶ विष्णु + ब्रह्मा + रुद्र

इस विभाजन के पश्चात् एलेक्ट्रॉन तारा समूह निरन्तर गतिशील हैं, अर्थात् लगभग एक खरब सूर्य केन्द्रीय स्तम्भ (न्यूट्रॉन तारा समूह) की निरन्तर परिक्रमा कर रहे हैं तथा भगवान रुद्र द्वारा अव्यक्त रहकर उनका सतत विघटन किया जा रहा है। इस विघटन का उद्देश्य है, कि सृष्टि अपनी पूर्वावस्था (निष्क्रियता) को अर्थात् शान्त अवस्था को पुनः प्राप्त करे। विखण्डित कण

---

a वे जो सदाशिव हैं, उन्हें परमपुरुष, ईश्वर, शिव, शम्भु और महेश्वर कहते हैं। **वे अपने मस्तक पर 'आकाशगंगा' को धारण करते हैं।** *(पृष्ठ 100, संक्षिप्त शिवपुराण, अध्याय 6, रुद्र संहिता, गीता प्रेस, गोरखपुर, तेरहवाँ संस्करण, वि0सं0 2057)*

b इस सम्बन्ध में पुस्तक के भाग-3 में एक लेख *'गंगा-आकाशगंगा का प्रतीक'* संलग्न है।

c *Page-250 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo*

पुनः मिलकर न्यूट्रॉन कण बन जाने की ओर प्रवृत्त हैं, इस प्रकार पूरी प्रकृति अपनी निश्चित कालावधि के पश्चात् शान्त अवस्था को प्राप्त होगी। ***हर जीवात्मा भी ठीक ऐसी ही सम अवस्था प्राप्त करने के लिए सतत प्रयासरत है।*** भगवान शिव सृष्टि के आरम्भ में डमरू बजाकर ध्वनि उत्पन्न करते हैं तब सृजन का कार्य आरम्भ होता है तथा सृष्टि के विनाश काल में भी डमरू की ध्वनि द्वारा अनेकानेक विस्फोटों (ध्वनियों) का क्रम चलता है तथा ग्यारह रुद्र ग्यारह प्रकार से विध्वंस करते हैं। इस काल में भगवान शंकर भयानक रौद्र रूप धारण करके सारी प्रकृति को विध्वंस कर देते हैं। दूसरे हाथ की लाल-लाल ज्वाला वाली जीभ विध्वंस की प्रतीक है। भगवान शिव के हाथ में त्रिशूल प्राणियों के तीन प्रकार के आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक [a] शूलों (कष्टों) के शमन करने का प्रतीक है। ऊपर उठा चौथा हाथ भक्तों को अभय दान देने का प्रतीक है। क्योंकि न्यूट्रॉन कण क्वार्कों से समायोजित रहता है, अतएव चार हाथ चार क्वार्कों के प्रतीक हैं।

शिव शब्द का विश्लेषण करें, तो बनता है "शव+इव" अर्थात् शव (मृत शरीर) जैसा। न्यूट्रॉन कण में चूँकि कोई आवेश नहीं होता अतएव 'शव' जैसा शब्द उनके इस गुण को दर्शाता है, इसके अतिरिक्त इस शब्द से भगवान शिव की कई अन्य प्रवृत्तियों पर भी प्रकाश पड़ता है। शव (मृत शरीर) पर गर्मी-सर्दी तथा मान-अपमान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। शिव का विग्रह यह संदेश देता है, कि जो भी साधक पदार्थ जगत से निरासक्त रहकर सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख, मान-अपमान को समान समझ कर जीवन जियेगा वह जीवन के चरम लक्ष्य (मोक्ष) को प्राप्त कर लेगा, अर्थात् बारम्बार के जीवन-मृत्यु-जीवन के चक्र से मुक्त हो जायेगा। क्योंकि ऐसा जीवन जीने पर अवचेतन पर कोई संस्कार रिकार्ड नहीं होता अतएव मानव चित्त पर रिकार्ड शून्य होते ही आल्फा, बीटा, गामा तरंगें सिमट कर अपने उद्गम भगवान शिव में विलीन हो जाती हैं। इसी अवस्था का नाम मोक्ष है, जो अति दुर्लभ स्थिति है।

शिव-पार्वती परिवार

चित्र : 5.03(a)

शिव-पार्वती परिवार :—भगवान शिव के पारिवारिक चित्रण जहाँ पर सभी प्रकार के विरोधी सदस्य सर्प-मोर, चूहा-सर्प, सिंह-वृष उपस्थित हैं, से यह संदेश मिलता है, कि

---

a *परिभाषाएं :-* **आधिभौतिक** - व्यापार, नौकरी, धन सम्बन्धी पदार्थों के अभाव के कारण कष्ट।
आधिदैविक - प्राकृतिक शक्तियों, सूर्य, चन्द्र, ग्रहों आदि के कारण उत्पन्न शूल, जैसे - दुर्घटनाएं एवम् रोग आदि।
आध्यात्मिक - मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक क्लेश, जैसे - मानसिक तनाव, विक्षिप्तता, मूढ़ता, बुद्धि भ्रम, पापमय प्रवृत्ति के कारण कष्ट।

साधक को विपरीत परिस्थितियों में विचलित नहीं होना चाहिए तथा किसी के प्रति भी शत्रुभाव नहीं रखना चाहिए, अर्थात् सामंजस्य एवम् प्रेम बनाए रखना चाहिए। साधक को शिव परिवार से सम मनः अवस्था में रहने की शिक्षा मिलती है, जिसको जीवन में धारण करने से ही साधक शिवमय बन सकता है।

• **पार्वती** :- सम आवेश (±) से आवेशित एन्टीन्यूट्रॉन कण पार्वती-शक्ति (Potential energy) को धारण करते हैं। आरम्भ में जब प्रकृति शान्त (प्रलय) अवस्था में थी तब सारी शक्ति स्थिररूपा (Potential energy) थी, इसीलिए पार्वती को आद्या शक्ति के रूप में मान्यता दी गयी है। परन्तु जब प्रकृति में ईश्वरीय प्रेरणा से गति आरम्भ हुई, तब स्थिरशक्ति ने गति के कारण गतिजऊर्जा (Kinetic energy) का रूप ले लिया। गतिजऊर्जा क्रियात्मक शक्ति होने के कारण **'दुर्गा'** अर्थात् दूर-दूर तक गमन करने वाली बन गयी। दुर्गा का वाहन सिंह है तथा ये आठ भुजा वाली हैं। सभी भुजाओं में अस्त्र-शस्त्र हैं। इस प्रकार का चित्रण क्रियात्मक वीरतापूर्ण शक्ति के प्रतीक को दर्शाने के लिए किया गया है। दुर्गा की आराधना करने से मानव की दुष्प्रवृत्तियों का नाश हो जाता है तथा साधक की **'प्राण-शक्ति'** सतेज हो जाती है। परिणामस्वरूप उसका बुद्धिबल, विद्याबल, धनबल सभी कुछ वृद्धि को प्राप्त होता है। इस प्रकार उसकी सभी सांसारिक (शुभ अथवा अशुभ) कामनाओं की पूर्ति हो जाती है।

शक्ति (दुर्गा) के अन्य नामों का उल्लेख चतुर्थ सत्र में *'सृजन प्रक्रिया-एक परिकल्पना'* के चित्र संख्या 4.06 पर किया गया है। उनके सम्भावित समानार्थक वैज्ञानिक नाम भी साथ में दिए गये हैं। आधुनिक वैज्ञानिक युग में उन सभी प्रकार की शक्तियों (ऊर्जाओं) का खुल कर प्रयोग हो रहा है।

• **वृष वाहन** :- वृष 'धर्म' का प्रतीक है। धर्म चार पैरों (पादों) पर खड़ा है - सत्य, तप, यज्ञ तथा दान। युगान्तर में यह धर्म क्रमशः क्षीण होता जाता है। भगवान शंकर ज्ञान के साक्षात् अवतार हैं। वे सदैव प्रकृति पर धर्मानुसार शासन करते हैं, अर्थात् सृष्टि की रचना, पालन एवम् संहार धर्म के नियमों के आधार पर ही प्रकृति से करवाते हैं। अतएव उनका वाहन **'धर्म'** अर्थात् **वृष** है।

• **शिव - विज्ञान के शब्दों में** :- शिव लोक में स्थित न्यूट्रॉन तारा समूह से निर्मित सम (±) आवेश से आवेशित, आकाशगंगा का केन्द्रीय स्तम्भ, कुल आकाशगंगा के भार का 2/3 भार के बराबर है, तथा पूरी तरह से बर्फ से ढका है। इस स्तम्भ ने पूरी आकाशगंगा को सम्भाल रखा है और इसमें भारी मात्रा में स्थिर शक्ति (Potential Energy) का संचय है। यह स्तम्भ अव्यक्त चेतन शिवबल को धारण करता है तथा इस बल के मानवीकृत स्वरूप शिव हैं। यह शिवबल विष्णु, ब्रह्मा एवम् रुद्र बलों का जन्मदाता है तथा भगवान शिव इन बलों के माध्यम से सृजन, पालन तथा विध्वंस के कार्यों का नियमन करते हैं। शिवबल **'अव्यक्त-ब्रह्म'** के अहंकार हैं। अर्थात् यह शिव बल (न्यूट्रॉन तारामण्डल) पृथ्वी के सभी प्राणियों के अहंकार [a] को नियंत्रित करता है।

---

a **अहंकार** :- सभी जीवात्माओं में द्वैत भावना का होना अहंकार कहलाता है। सृष्टि के सृजन के पश्चात् सभी जीवात्माओं में यह भाव सतत् बना रहता है, कि वे परमात्मा से भिन्न हैं। जिस क्षण जीवात्मा यह अनुभव कर लेती है, कि वह परमात्मा से भिन्न नहीं है; उसी क्षण उसका अहंकार (अहम्+आकार=मेरा अपना भिन्न स्वरूप) समाप्त होकर वह परमात्मा में लीन हो जाती है।

• **शिव उपासना :-** यह जगप्रसिद्ध है, कि भगवान शंकर औढरदानी हैं, अर्थात् वे बहुत शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। आकाशगंगाओं से सतत बरसते अनेक चुम्बकीय विद्युत कण विशेषकर साधना काल में न्यूट्रॉन कण भक्त के चारों ओर एक प्रभामण्डल (Aura) का निर्माण करते हैं। न्यूट्रॉन कण परमाणु से बाहर होने पर औसतन 1000 सेकंड की कालावधि में विघटित हो जाते हैं। इस कण के टूटने से एलेक्ट्रॉन प्रोटॉन एवम् न्यूट्रीनों कणों की उत्पत्ति होती है[a]। सम्भव है, कि न्यूट्रॉन कणों के इस विघटन प्रक्रिया से उत्पन्न प्रोटॉन कणों पर भक्त की भावना तत्काल रिकॉर्ड हो जाती हो, जिस कारण से भक्त की मनोकामना की शीघ्र पूर्ति हेतु पृष्ठभूमि तैयार हो जाती हो और इस प्रकार साधक को शीघ्र सफलता मिल जाती हो।

शिवजी की उपासना में ***'नमः शिवाय'*** मंत्र के अतिरिक्त एक जगत प्रसिद्ध मंत्र और है जिसे ***'महामृत्युञ्जय'*** मंत्र के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है, कि इस मन्त्र का जाप करने से अकाल मृत्यु टल जाती है और कठिन से कठिन रोग से ग्रस्त रोगी को भारी कष्ट से छुटकारा मिल जाता है, निःसन्देह श्रद्धा में बहुत बल होता है, परन्तु मंत्र का सही अर्थ क्या है, यह जानना विशेष रूप से लाभदायक होगा।

❖ महामृत्युञ्जय मंत्र :-

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात्, मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

पहला पद - ***ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।***

अर्थ :- हे ॐकार स्वरूप, तीन नेत्र वाले भगवान शंकर ! मैं आपका यजन (पूजा) करता हूँ अथवा आपसे याचना करता हूँ, कि मुझे पुष्टता से भरपूर निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता हुआ सुगन्धित (निरोग) शरीर प्रदान करें। (सम्पूर्ण रूप से निरोग शरीर किसी पूर्ण योगी का ही होता है, अतः सुगन्धित शब्द से यहाँ पर अर्थ सम्पूर्ण निरोग शरीर से है)

दूसरा एवम् तीसरा पद - ***उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।***

जिस प्रकार पका हुआ खरबूजा डाल से बिना कष्ट के अलग हो जाता है, उसी प्रकार हे भगवन् ! मेरी मृत्यु सुखमय हो। (आमतौर पर मृत्यु के समय सभी जीवात्माओं को बहुत ही अधिक वेदना और छटपटाहट होती है, इसलिए उस वेदना से रक्षा हो, ऐसी प्रार्थना की गयी है) तथा तीसरी बात है, कि मृत्यु के पश्चात् हे प्रभु ! मुझे मोक्ष प्रदान करें अर्थात् सदा-सदा के लिए मृत्यु और जीवन का चक्र टूट जाये।

सारांश यह है, कि इस मंत्र में भगवान शंकर से तीन बातों की प्रार्थना की गयी है -

(a) स्वस्थ और नीरोग शरीर प्रदान करें।

(b) सुखद मृत्यु प्रदान करें।

(c) मृत्यु के पश्चात् मोक्ष प्रदान करें।

प्रातः काल सूर्योदय के समय जब तक लाल-लाल सूर्य दिखलायी देता रहता है, लगता है पृथ्वी पर आकाश से प्रोटॉन कणों की सघनता से वर्षा होती है। ये कण स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हैं, इसीलिए प्रातः काल के सूर्य दर्शन का महत्व है। ***तुलसी के पत्तों में खास कर जड़ में,*** पीपल के वृक्ष की छाल में, गंगा जी के जल में कदाचित् ओजोन (O_3) के गुण निहित

---

a यह विश्लेषण इसी सत्र के अनुच्छेद-3 पर दिया गया है।

हैं, सम्भवतः इसी कारण गंगाजल वर्षों तक नहीं सड़ता अतएव इन प्रतीकों का मानव जीवन में भारी महत्व माना गया है। परन्तु आज सीवर के गंदे नालों तथा रासायनिक कचरे से प्रदूषित गंगाजल की वह पहले जैसी गुणवत्ता नहीं रही है। कुछ घण्टे पूर्व तुलसी के पत्तों को जल में डाल देने से जल के दोष नष्ट हो जाते हैं। खाँसी, जुकाम आदि में लाभकारी होने के अतिरिक्त ***तुलसी की जड़ के सेवन से स्तम्भन शक्ति बढ़ती है***, अतएव गृहस्थ जीवन में इसका विशेष महत्व है। तुलसी के कुछ पत्ते हर व्यक्ति को नित्य सेवन करना चाहिए। पीपल की छाल से स्त्रियों की मासिक सम्बन्धी रोगों को दूर करने में सहायता मिलती है तथा श्वाँस रोग सम्बन्धी विकार दूर होते हैं, अतएव इस वृक्ष पर भगवान विष्णु का वास माना गया है। इन सभी विषयों की विज्ञान द्वारा पुष्टि की जानी चाहिए।

4. श्रीराम :- श्रीराम की सौम्य मूर्ति धनुष बाण धारण किए हुए दर्शायी गयी है। वे दशरथ के पुत्र श्रीराम पिता की आज्ञा मानकर चौदह वर्ष के लिए वन में गये। वहाँ पर खर दूषण, त्रिसिरा तथा चौदह सहस्र राक्षसों का वध किया तत्पश्चात् राक्षसों की एक विशाल सेना समेत रावण, कुम्भकरण एवम् मेघनाद का वध करके अयोध्या लौट आए तब उनका राज्याभिषेक हुआ। राजा राम ने मर्यादित, तपस्वी एवम् त्यागमय जीवन जिया तथा मानव समाज के लिए इन्हीं मानदण्डों की स्थापना की। भगवान राम को विष्णु का अवतार मान कर पूजा की जाती है।

मानव शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। इन दस इन्द्रियों से बना रथ (दशरथ) रूपी मानव शरीर में स्थित आत्मा ही राम हैं[a]। ***'यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'*** सिद्धान्त के अनुसार मानव शरीर में स्थित आत्मा ब्रह्माण्ड में परमात्मा का वाचक है।

एक कल्प की कालावधि अर्थात् चौदह मनुओं की कालावधि श्रीराम जी का प्रतीक रूप में अयोध्या से चौदह वर्ष का वनवास है[b]। इस अवधि में आकाश में अनेक प्रकार के

---

a कठोपनिषद् में अलंकारिक भाषा में ***शरीर को रथ,*** मन को लगाम, इन्द्रियों को घोड़े, इन्द्रियों के विषयों को मार्ग, बुद्धि को सारथी तथा स्वामी (रथी) को आत्मा बतलाया गया है। *(कठोपनिषद्-1.3.3-4)*

b हमारी आकाशगंगा एक कल्प में सभी अन्य आकाशगंगाओं के साथ किसी अव्यक्त केन्द्र की चौदह परिक्रमाएं पूरी करती है। एक कल्प की कालावधि अर्थात् अपनी आकाशगंगा द्वारा चौदह परिक्रमाओं को चौदह मनु कहा गया लगता है। प्रत्येक मनु की कालावधि में पृथ्वी पर प्राणियों की प्रवृत्ति में परिवर्तन होता रहता है, परिणामस्वरूप अनेकानेक प्रकार के प्राणियों के सृजन एवम् विध्वंस की प्रक्रिया सतत चलती रहती है। क्रमशः इन मनुओं की बदलती प्रवृत्तियों के अनुरूप पृथ्वी पर मानवों के सोच-विचार के तौर तरीके भी बदलते रहते हैं, अतएव सभ्यताएं बनती-बिगड़ती रहती हैं। सुख-सुविधाओं एवम् भोग-विलास के तौर तरीके हर मनु की परिक्रमा के साथ बदलती प्रवृत्तियों के कारण बदलते रहते हैं इसीलिए प्रत्येक मनु के दौरान इन्द्र भी बदल जाता है, क्योंकि भोग विलास एवम् सुख-सुविधाओं की प्रवृत्तियों का प्रतीक इन्द्र है। एक कल्प = 4.32×10^9 मानव वर्ष = 14 मनु। एक मनु की कालावधि = $71\frac{3}{7}$ चतुर्युग। एक चतुर्युग = 43,20,000 मानव वर्ष। एक चतुर्युग में - सतयुग = 17,28,000 मानव वर्ष, त्रेता युग = 12,96,000 मानव वर्ष, द्वापर = 8,64,000 मानव वर्ष तथा कलियुग = 4,32,000 मानव वर्ष के होते हैं।

अणु- परमाणुओं का जन्म होता रहता है, जिनमें देव कण तथा राक्षस कण दोनों का सृजन एवम् विघटन एक अनवरत प्रक्रिया है[a]। देव कण अर्थात् विष्णु पक्ष की शक्तियाँ, सृष्टि के सृजन एवम् पालन में भरपूर सहयोग करती हैं। इन देव कणों में हनुमान, जामवन्त, अंगद, नल, नील, विभीषण, सुग्रीव तथा बाली हैं। ये सभी देव कणों की प्रवृत्ति के प्रतीकात्मक नाम हैं। परन्तु असुर (असुर=जो प्रकृति के अनुकूल अर्थात् सुर में न हों) निरन्तर विष्णु पक्ष की शक्तियों का विध्वंस करने में लगी रहती हैं, अतएव ऐसी असुर शक्तियाँ राक्षस अथवा दानवों के नाम से जानी गयी हैं। इन दानव शक्तियों अर्थात् रावण, कुम्भकरण, मेघनाद तथा खर दूषण, त्रिसिरा आदि के विनाश हेतु श्रीराम (प्रकाश बल) ने अवतार धारण किया। विज्ञान के अनुसार फोटॉन कण कास्मिक किरण (Cosmic Ray) क्षेत्र से विकीरित होता लगता है। विज्ञान द्वारा लिए गये नवीनतम चित्र के अनुसार विश्व में लगभग दो सौ अरब आकाशगंगाएं हैं, जिनमें असंख्य सूर्य हैं। इन सूर्यों से निःसृत फोटॉन कण विश्व की बाह्य परिधि को मर्यादा (सीमा) में बनाए हुए हैं *(आगामी पृष्ठ पर चित्र 5.05(a) द्वारा यह भाव दर्शाने का प्रयास किया गया है)*। अतएव फोटॉन कण अव्यक्त चेतन प्रकाश रूप श्रीराम को धारण करते हैं तथा श्रीराम मर्यादा एवम् ज्ञान के मानवीकृत प्रतीक हैं।

भगवान श्रीराम

चित्र : 5.04

श्रीरामचरितमानस में श्रीराम को प्रकाश का प्रतीक बतलाया गया है -

चौ0 - ***सहज प्रकाश रूप भगवाना***[b]।

अर्थ - भगवान राम सहज में ही प्रकाश के प्रतीक हैं।

चौ0 - ***जगत प्रकास्य प्रकाशक रामू***[c]।

अर्थ - सारा जगत प्रकाशमान है और श्रीराम जगत के प्रकाशक हैं।

चौ0 - ***सब कर परम प्रकाशक जोई। राम अनादि अवधपति सोई***[d]।।

अर्थ - पूरे विश्व को जो प्रकाशित कर रहा है, वही अनादि (जिसका प्रारम्भ का ज्ञान न हो) अवध के राजा राम हैं।

श्रीराम की एक परिभाषा और है ***"यः सर्वत्र रमते सः रामः"*** अर्थात् जो कण-कण में

---

a These interactions involve a ceaseless flow of energy manifesting itself as the exchange of Particles, a dynamic interplay in which particles are created and destroyed without end in a continual variation of energy patterns. *(Page-249 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)*

b *श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दो. 115-116 के मध्य*

c & d *श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दो. 116-117 के मध्य*

विद्यमान [a] हो वह ***'राम'*** है। संसार का कोई भी पदार्थ अथवा प्राणी ऐसा नहीं है, जिसमें प्रकाश विद्यमान न हो। ***'सूक्ष्मता के सिद्धान्त' के अनुसार सूक्ष्म शक्ति तरंगे स्थूल तरंगों एवम् स्थूलतर [b] तरंगों से निर्मित पदार्थ जगत का नियमन करती हैं। ब्रह्माण्ड में चूँकि सुर एवम् असुर दोनों प्रकार के कणों का सृजन एवम् विघटन निरन्तर हो रहा है, अतएव इस सिद्धान्त के अनुसार इन संघर्षों का प्रभाव पूरी तरह से पृथ्वी (स्थूल जगत) पर सतत् पड़ता है।*** असुर कणों में रावण, कुम्भकरण तथा मेघनाद क्रमशः अहंकार, मत्सर (आलस्य) और मोह की प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं तथा खर दूषण एवम् त्रिसिरा काम, क्रोध एवम् लोभ के प्रतीक हैं। इन आसुरी प्रवृत्तियों का विनाश 'ज्ञान' (राम) के द्वारा ही होता है। मोह का संहार गुरुत्व बल नियामक श्री लक्ष्मण के द्वारा किया जाता है'। ***उपरोक्त छह प्रवृत्तियाँ मानवों पर निरन्तर हावी होती रहती हैं और पृथ्वी पर वैदिक विचारधारा बारम्बार प्रताड़ित होती है।*** यह संघर्ष सतत चलता है, विशेष कर त्रेता, द्वापर तथा कलियुग में, क्योंकि तब धर्म क्रमशः तीन पाद, दो पाद एवम् एक पाद से ही प्रतिष्ठित रहता है [c]। ब्रह्माण्डीय संघर्ष का अनुवाद पृथ्वी पर पूरे चौदह मनुओं की कालावधि में प्रवाहमान रहता है। ***काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर एवम् मोह इन छह प्रकार की प्रवृत्तियों की पृथ्वी पर उत्पत्ति आकाशीय असुर कणों के प्रभाव के कारण होती है।*** ऋषि बाल्मीकि एवम् गोस्वामी तुलसीदास तथा अन्य अनेक कवियों द्वारा प्रतीकों की भाषा में लिखी गयी रामायणों से यही भाव स्पष्ट होता लगता है। हर कवि ने जो दृश्य आकाशीय संघर्ष का अपने चित्तपटल पर समाधि अवस्था में देखा, वही उसने लिखा। हर कल्प

बबुल चैम्बर में कणों का संघर्ष

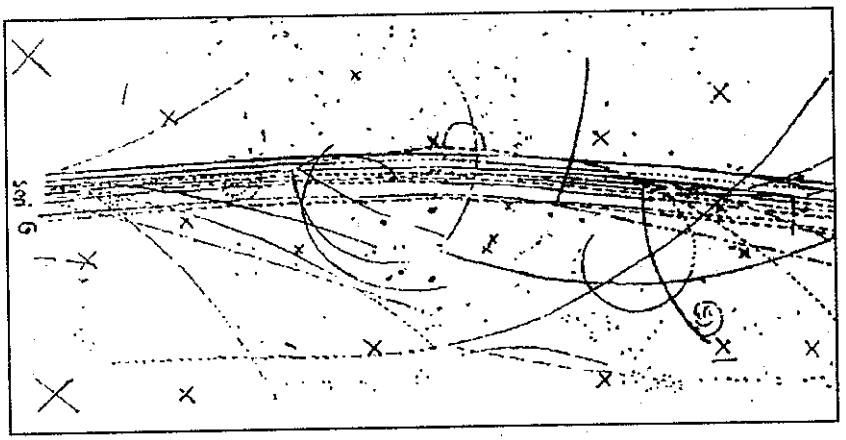

चित्र : 5.04(a)

---

a Thus the electromagnetic forces are due to the presence of virtual photons within charged particles.

(Page-245 Tao of Physics. 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)

b ठोस पदार्थ स्थूलतर तरंगों का रूपान्तरण ही तो है।

c धर्म के चार पाद हैं - सत्य, तप, यज्ञ एवम् दान। प्रत्येक युग में क्रमशः एक-एक पाद क्षीण होता जाता है।

की रामायण भी भिन्न-भिन्न लिखी गयी [a]। पूरी आकाशगंगा के विनाश होने तक हमारा सौरमण्डल 18,000 बार [b] बनता तथा नष्ट होता है, सम्भव है कि उतनी ही बार ऋषियों द्वारा रामायण लिखी गयी हो। ऋषियों ने आज के भौतिक शास्त्रियों द्वारा बबुल चैम्बर (Bubble Chamber) में देखे गये अणु-परमाणुओं के आकाशीय संघर्षों [c] का प्रतीकों की भाषा में चित्रांकन किया, जिससे कि विज्ञान का युग आने पर उस पीढ़ी के विद्वान उसे खुलासा (Decode) करके विश्व के विशाल पटल पर हो रहे चित्र को पूरा-पूरा समझ सकें और लाभ ले सकें। देवर्षि नारद के मार्गदर्शन पर ऋषि वेदव्यास ने आदि कवि महर्षि वाल्मीकि की भाँति ही समाधि में उतरकर श्रीमद्भागवत [d] कथा का लेखन किया है, जो परमात्मा का श्रेष्ठ भावमय एवम् प्रेमलीला का स्वरूप है। हमारे पूर्वज इतनी गहराइयाँ और ऊँचाइयाँ बहुत पहले ही छू सके थे, जिस पर भारतीयों को गर्व है। चौदह मनुओं के नियमन से उत्पन्न छह प्रकार की दुष्प्रवृत्तियों का गुणनफल चौरासी लाख योनियों के निर्माण की सांख्यिकी बतलाता लगता है।

श्रीराम को क्षत्रिय रूप अर्थात् धनुष-बाण धारी दर्शाने का उद्देश्य है, कि फोटॉन कण ही उन आकाशीय राक्षसी कणों का विनाश करते हैं, अतएव मानवों में उन दुष्प्रवृत्तियों को उत्पन्न करने वाले कणों को नष्ट करने हेतु अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग प्रतीकात्मक है। ***'यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'*** की यह अति क्लिष्ट परिभाषा जनसाधारण के लिए अति दुरूह है, अतएव विद्वान कवियों ने इन भौतिक शास्त्रीय तथ्यों को अति सुन्दर काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है, जो शैली विश्व में अद्वितीय है। कथा में आदर्श पुत्र, भाई एवम् आदर्श राजा का लिखा जाना तथा राजनीति, धर्मनीति एवम् समाजनीति का कथा में समावेश करना समाज को दिशा-निर्देश देने के लिए आवश्यक है, कवियों ने वही किया। एक कल्प में हिरण्यकश्यप-हिरण्याक्ष का वध होता है, तो दूसरे तथा तीसरे कल्प में जलंधर और रावण-कुम्भकरण का [e]। ***भौतिक शास्त्र***

---

a & e संदर्भ - *श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दो. 121-124 के मध्य :-*

चौ.:- ***कनक कशिपु अरुहाटक लोचन। जगत विदित सुरपति पद मोचन।।***

अर्थ :- (एक कल्प में) हिरण्याक्ष तथा हिरण्यकशिपु नामक राक्षस उत्पन्न हुए, जिन्होंने इन्द्र का गर्व चूर किया तथा सारे विश्व में विख्यात हुए।

चौ.:- ***बिजई समर वीर विख्याता। धरि बराह बपु एक निपाता।।***
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा। जन प्रहलाद सुजस विस्तारा।।

अर्थ :- वे (दोनों) युद्ध में विजय पाने वाले विख्यात वीर थे। इनमें से एक (हिरण्याक्ष) को भगवान ने वराह (सुअर) का शरीर धारण करके मारा तथा दूसरे (हिरण्यकशिपु) का नरसिंह रूप धारण करके वध किया और अपने भक्त प्रहलाद का सुन्दर यश का विस्तार किया।

चौ.:- ***एक कलप सुर देखि दुखारे। समर जलंधर सन सब हारे।।***

अर्थ :- (एक अन्य कल्प में) सब देवता गण जलन्धर नामक दैत्य से युद्ध में हार गये तथा दुःखी हुए।

चौ.:- ***तहाँ जलंधर रावन भयउ। रन हति राम परम पद दयऊ।।***

अर्थ :- (वही जलन्धर अगले कल्प में) रावण हुआ, जिसे श्री रामचन्द्र जी ने युद्ध में मारकर परमपद दिया।

चौ.:- ***प्रति अवतार कथा प्रभु केरी। सुनु मुनि बरनी कबिन्ह घनेरी।।***

अर्थ :- प्रभु के प्रत्येक अवतार की कथा का कवियों ने नाना प्रकार से वर्णन किया है।

b इसका गणित 'विराट ब्रह्मा' शीर्षक के अन्तर्गत आगामी पृष्ठों पर दिया गया है।

c बबुल चैम्बर में देखे गये कणों के संघर्ष का एक चित्र संख्या-5.04(a) *Tao of Physics* के पृष्ठ-260 से उद्धृत है।

d श्रीमद्भागवत महापुराण प्रथम खण्ड गीता प्रेस गोरखपुर पन्द्रहवाँ संस्करण वि.सं. 2047 नारद उवाच : हे व्यास जी। अब आप सम्पूर्ण जीवों को बन्धन से मुक्त करने के लिए 'समाधि' के द्वारा अचिन्त्य शक्ति भगवान की लीलाओं का स्मरण कीजिए। (पृष्ठ 64)

की वैज्ञानिक घटनाओं को मानवीय प्रतीकों में ढालकर सुरुचिपूर्ण साहित्यिक रूप से प्रस्तुत करना भारतीय ऋषियों की श्रेष्ठतम खोजों का परिणाम है। इन कथाओं के लेखन में ऋषियों की सम्पूर्णता [a] की सोच निहित हैं, अर्थात् उन्होंने विज्ञान (सत्यम्) को साहित्य एवम् कला (सुन्दरम्) के साथ संगम कराकर मानव मात्र को कल्याण (शिवम्) की प्राप्ति कराने का सार्थक प्रयास किया है।

श्रीराम विष्णु के अवतार हैं। सभी जीवात्माओं का पृथ्वी पर अवतरण उनके चित्त में संग्रहीत संस्कारों (सूचनाओं) के कारण होता है अर्थात् मुख्यतया जीवात्मा के पृथ्वी पर जन्म लेने का आधार चित्त होता है। इसी प्रकार यदि श्रीराम पृथ्वी पर अवतार धारण करते हैं तो विष्णु (चित्त) ही मानो अवतरित होते हैं, क्योंकि विष्णु (चित्त) में पृथ्वी पर दुष्टों का विनाश करने तथा सज्जनों की रक्षा करने की इच्छा (संस्कार) संग्रहीत रहती है। अयोध्या लौटकर श्रीराम एक कल्प तक राज्य करते हैं। हमारे ब्रह्मा (सूर्य) की रात्रि भी एक कल्प के बराबर होती है। इस बीच सृष्टि शान्त (सम) अवस्था में रहती है। यही एक कल्प का समय राम का राज्य करना है। रामकथा को गाते हुए भक्तों को मुक्ति मिलना स्वाभाविक है। क्योंकि चित्तपटल पर जो कुछ सतत् अंकित होता रहता है, वही इस मानव की प्रवृत्ति बन जाती है और तब वैसा ही चित्र मृत्यु के समय जीव के चित्तपटल पर उभरता है और इस अन्तिम समय की प्रवृत्ति के आधार पर जीवात्मा का अगला जन्म होता है अथवा वह ईश्वर में लीन हो जाती है।

5. श्रीकृष्ण :- श्रीकृष्ण का विग्रह अति सुन्दर है। उनका रंग श्याम है। हाथ में मुरली, सिर पर मोर मुकुट, कानों में मकराकृत कुण्डल। मन्द-मन्द मुस्कान, तिरछी नज़र, तिरछा चरण, कमर तथा गर्दन भी विपरीत दिशाओं में मुड़ी हुई मुद्रा में दर्शायी गयी हैं। कुछ चित्रों में वे एक सुन्दर-सी गो के साथ टेक लगाकर खड़े भी दर्शाए गये हैं और कुछ में राधा के साथ मुरली बजाते दिखते हैं। जीवन में कदाचित् एक बार ही उन्होंने अपना चक्र सुदर्शन का प्रयोग शिशुपाल के वध हेतु किया था। उनकी नटखट बालपन की लीलाएं, रणछोड़ (संग्राम से भाग जाना) तथा गोप-गोपियों के साथ महारास उनके जीवन के मुख्य और रोचक प्रसंग हैं। अर्जुन को गीता का उपदेश देना तो भारतीय वाङ्मय का श्रेष्ठतम अध्याय है, जिसके लिए श्रीकृष्ण को युगों-युगों तक याद किया जायेगा।

पूरी सृष्टि में दो महाबल 'प्रकाश बल' (श्रीराम) तथा 'आकर्षण बल' (श्रीकृष्ण) सदा से विद्यमान हैं। चुम्बकीय विद्युत तरंगें (Electro-magnetic Waves) सृष्टि निर्माण में उपादान कारण (Building Block) हैं। इन्हीं चुम्बकीय विद्युत तरंगों के माध्यम से ये दोनों बल मिलकर सृष्टि निर्माण, पालन एवम् संहार का कार्य करते हैं।

आकर्षण अर्थात प्रेम - ***"यः कर्षति सः कृष्णः"*** जो सबको अपनी ओर आकृष्ट कर ले, वह कृष्ण है, अतः श्रीकृष्ण आकर्षण अर्थात् प्रेम के प्रतीक हैं। ग्वाल-बालों से प्रेम, गोओं से प्रेम, गोपियों से प्रेम, राधा से प्रेम। वे सर्वत्र प्रेम बाँटते हैं। उनके विग्रह का डिज़ाइन इस प्रकार का है, कि वे अपनी चार टेढ़ी मुद्राओं - तिरछी नज़र, तिरछा चरण, तिरछी कमर तथा तिरछी गर्दन

---

a इस सम्बन्ध में पुस्तक के भाग-3 में "मानव धर्म की समग्र दृष्टि—सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" शीर्षक से एक लेख संलग्न है।

के कारण अति आकर्षक लगते हैं। फिर मुरली बजाते हुए तो, वे सबका मन मोह लेते हैं। वे प्रेम के मानवीकृत स्वरूप हैं। प्रकाश बल सृष्टि निर्माण से लेकर विध्वंस होने तक प्रत्यक्ष रूप से कार्य करता हुआ प्रतीत होता है, जबकि चुम्बकीय बल की सृष्टि निर्माण, पालन तथा संहार में बराबर की भागीदारी होते हुए भी प्रत्यक्ष दिखलायी नहीं पड़ता। जिस प्रकार प्रत्येक पदार्थ में प्रकाश विद्यमान है, उसी प्रकार से आकर्षण बल (कृष्ण बल) भी कण-कण में विद्यमान रहकर सृष्टि को गति प्रदान करता है।

जिस प्रकार आर्मेचर को चुम्बक क्षेत्र (Magnetic field) में घुमाए जाने पर उस पर लिपटी तारों में विद्युत आवेश उत्पन्न हो जाता है उसी प्रकार सम्पूर्ण विश्व में हो रही सतत गति के कारण गतिमान पिण्डों में धन (+) तथा ऋण (-) आवेश उत्पन्न हो जाता है। विश्व के पिण्डों में निरन्तर गति देने का कार्य अव्यक्त परमात्म शक्ति कर रही है तथा आकाशगंगाओं से बरसते चुम्बकीय विद्युत कणों से पूरा विश्व एक स्थायी चुम्बक का महासागर बना हुआ है[a]। इस क्रिया-प्रतिक्रिया के फलस्वरूप परमात्म शक्ति धन (+), ऋण (-) तथा सम (±) आवेशों (गुणों) के रूप में प्रकट हो रही है। इसी को त्रिगुणमयी माया कहा गया लगता है।

गोपालक भगवान श्रीकृष्ण

चित्र : 5.05

कृष्ण शब्द का अर्थ काला होता है, इसीलिए श्रीकृष्ण का विग्रह श्याम रंग का है। इस प्रकार सृष्टि की शान्त (अव्यक्त) अवस्था में परमात्मा सदैव असीम आकर्षण बल अर्थात् कृष्ण रूप में विद्यमान रहता है। श्रीकृष्ण ने बचपन से ही अनेक राक्षसों का वध किया और इस प्रकार अपनी मातृभूमि की सतत् रक्षा की। गो-मातृभूमि का प्रतीक है, अतः उन्हें गोपालक के रूप में दर्शाया गया है।

विज्ञान द्वारा विश्व की ताजा तस्वीर खींची गयी है। इस तस्वीर के तीन भाग हैं- प्रथम, कृष्ण पदार्थ (Dark matter) जो अनुमान से 23% है तथा बहुत ज्यादा भारी भी है। दूसरा, श्याम शक्ति (dark energy) जो 73% है तथा तीसरी, दो सौ अरब आकाशगंगाएं जो अनुपात में कुल 4% लगती हैं तथा पूरी सृष्टि की परिक्रमा कर रही हैं। ऐसा लगता है, कि उपरोक्त चित्रण अव्यक्त चेतन सत्ता भगवान श्रीकृष्ण (Dark matter) द्वारा

---

a The field exists always and everywhere (throughout the space). It can never be removed. It is the carrier of all material phenomena.
..... The particles have to be seen as the condensations of a continuous field, which is present throughout space. In quantum field theory, the field is seen as the basis of all particles and of their material interactions.
(Page-246 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)

आयोजित विश्वपटल पर हो रहा महारास है। प्रकृति में ***'चक्र का सिद्धान्त'*** [a] एक शाश्वत सत्य है। इसी सिद्धान्त के आधार पर सृष्टि चक्र अनवरत रूप से घूमता रहता है अर्थात् जन्म-मृत्यु-जन्म ..... आदि। आकाशगंगाओं के जन्म-मृत्यु एवम् पुनः जन्म से लेकर पूरी सृष्टि में यही खेल चल रहा है।

सूर्यों में विखण्डन के समय हाइड्रोजन गैस हीलियम कणों में परिवर्तित हो जाती है। यही हीलियम कण चक्र के सिद्धान्त के अनुसार अव्यक्त रूप से आकाशगंगाओं के सृजन हेतु पुनः हाइड्रोजन गैस बन जाते हैं। इसी प्रकार आधुनिक विज्ञान द्वारा खींची गयी विश्व की ताज़ा तस्वीर से ऐसा लगता है, कि कृष्ण पदार्थ (Dark Matter) सर्वप्रथम डार्क एनर्जी (Dark Energy) में बदल जाता है, जो आगे आकाशगंगाओं का रूप ले लेता है। इस प्रक्रिया में चौंतीस लाख छप्पन हजार (34.56) मानव वर्ष लगते हैं। (कलि+सत्+त्रेता युगों का योग = 4.32+17.28+12.96 =34.56 लाख वर्ष) अर्थात् इस कालावधि के पश्चात् कृष्ण का श्रीराम के रूप में अवतरण होता है। उन आकाशगंगाओं के अनन्त सूर्यों से उत्सृजित फोटॉन कण पुनः कृष्ण पदार्थ (dark matter) बन जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है, कि इस प्रक्रिया को पूर्ण होने में आठ लाख चौंसठ हजार (8.64) मानव वर्ष लगते हैं। अर्थात् तब 'रामबल' (प्रकाश कण) का कृष्ण बल (चुम्बकत्व) में परिवर्तन हो जाता है अर्थात् श्रीराम का श्रीकृष्ण के रूप में अवतरण होता है। भारतीय ऋषियों की प्रतीकों की भाषा को विज्ञान के शब्दों में अनूदित करने से तो यही चित्र बनता लगता है। इस अवतरण का यह अर्थ नहीं है, कि रामबल समाप्त हो जाता है। दोनों बल साथ-साथ चलते हैं, अन्तर इतना होता है कि एक काल में रामबल की प्रधानता रहती है तथा दूसरे काल में कृष्णबल की। दोनों बलों के अवतरण का एक ही उद्देश्य है, दुष्टों का विनाश तथा प्राकृतिक धर्म की पुनर्स्थापना। भारतीय शास्त्रों में कृष्णबल को प्रकाशबल के समान ही माना गया है और कहा गया है, कि युगान्तर के पश्चात् राम (प्रकाशबल) कृष्ण रूप में अवतरित होते हैं। कृष्ण पर मन को एकाग्र करने से साधक में आकर्षण बल (प्रेम) का आविर्भाव होता है।

महारास का सम्भावित वैज्ञानिक चित्र

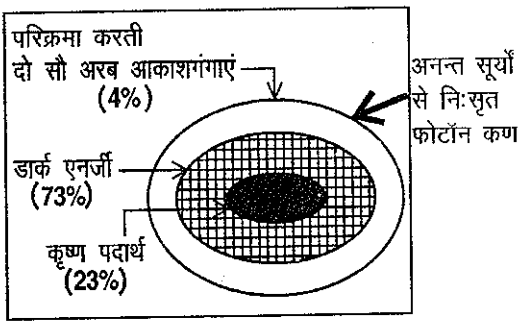

चित्र-5.05(a)

महारास का प्रतीकात्मक चित्र

चित्र-5.05(b)

a चक्र के सिद्धान्त की चर्चा **प्रथम** सत्र में संक्षेप से तथा **द्वितीय सत्र** में विस्तार से की जा चुकी है।

6. श्री लक्ष्मण
7. श्री बलराम

} राम कथा तथा कृष्ण कथा में क्रमशः श्री लक्ष्मण जी को श्रीराम के लघु भ्राता तथा श्री बलराम जी को श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता के रूप में चित्रित किया गया है। दोनों को शेषावतार अर्थात् गुरुत्वबल नियामक के रूप में माना गया है। श्री लक्ष्मण जी धनुर्धारी हैं, जबकि श्री बलराम जी हल को धारण करने वाले (हलधर) हैं। दुष्टों का विध्वंस एवम् सज्जनों की रक्षा करने में दोनों बलों ने अपने भ्राताओं का सहयोग किया। पूरे विश्व में अरबों आकाशगंगाएं हैं और उनमें खरबों, खरबों सूर्य हैं। हमारी अपनी आकाशगंगा में ही हमारे सूर्य से भी हजारों गुना बड़े-बड़े सूर्य हैं। इन सभी सूर्यों की पदार्थ मात्रा (mass) इतनी विशाल है, कि इनमें निहित गुरुत्वाकर्षण बल के कारण इनके चारों ओर का आकाश (space) वक्रीय (curved) शक्ल ले लेता है[a]। इन विशाल सूर्यों के बीच गुरुत्वाकर्षण बल होने से इन सभी सूर्यों तथा अन्य पिण्डों द्वारा परस्पर आकर्षण बल इन्हें खींच कर रखता है तथा उनमें एक ही प्रकार का आवेश (charge) होने के कारण विकर्षण शक्ति (Repulsive Force) भी कार्यरत रहती है। दोनों शक्तियाँ मिलकर पिण्डों का घूर्णन एवम् मार्ग (path) का निर्धारण करती हैं और इस प्रकार वे आकाश (space) में गतिमान रहते हैं तथा मार्ग से भटक नहीं पाते।

दूसरी बात यह है, कि आकाशगंगाओं के सूर्यों द्वारा चारों ओर प्रकाश कणों (Photons) का विकीरण होता रहता है, परन्तु जब यह प्रकाश दूसरे सूर्यों (विशाल पिण्डों) के पास से गुजरता है, तब गुरुत्वाकर्षण बल के कारण वह भी मुड़ जाता है। इस प्रकार प्रकाश अपने गन्तव्य पर साधारण समय पर न पहुँच कर कुछ अधिक समय पर ही पहुँच पाता है। इसका अर्थ यह हुआ, कि ***'गुरुत्व बल'*** आकाश (space) तथा समय (time) दोनों को प्रभावित करता है।

'रामचरितमानस' में तुलसीदास जी बतलाते हैं, कि लक्ष्मण जी का नाम लक्ष्मण इसलिए रखा गया है, क्योंकि वे सारे जगत के आधार हैं तथा राम को प्रिय हैं।

दो. :- ***लच्छन धाम राम प्रिय - सकल जगत आधार।***
गुरु वशिष्ठ तेहि राखा, लछिमन नाम उदार [b] ।।

तथा वे ऋषि बाल्मीकि के माध्यम से बतलाते हैं, कि -

छन्द - ***जो सहससीसु अहीस महिधरु लखनु सचराचरधनी।***
सुर काज धरि नरराज तनु, चले दलन खल निशिचर अनी [c] ।।

अर्थ :- लक्ष्मण जी हजारों-हजारों सिरों वाले शेषनाग (गुरुत्व बल) के अवतार हैं, उन्होंने देवताओं की रक्षा हेतु तथा राक्षसों के विनाश के लिए मानव शरीर धारण किया है।

इसी प्रकार भागवत्पुराण में बतलाया गया है, कि श्री बलराम जी भगवान के अंशस्वरूप

---

a Wherever there is a massive body, there will also be a gravitational field, and this field will manifest itself as the Curvature of the space surrounding that body. We must not think, however, that the field fills the space and 'curves' it. The two cannot be distinguished; the field is the curved space.
(Page-230 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)

b *श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दो. 197*

c *श्रीरामचरितमानस अयोध्याकाण्ड दो. 125-126 के मध्य*

श्री शेष जी (गुरुत्व बल) के अवतार हैं [a]।

उपरोक्त उद्धरणों से एक बात स्पष्ट है, कि प्रकाश बल (श्रीराम) तथा श्री लक्ष्मण (गुरुत्व बल) एवम् चुम्बकीय बल (श्रीकृष्ण) तथा श्री बलराम (गुरुत्व बल) सदैव से साथ-साथ चलते रहे हैं। सृष्टि के सृजन, पालन एवम् संहार करने में इन बलों [b] की भागीदारी साथ-साथ ही रहती है अर्थात् ये बल विराट में सहभागी रहकर विश्व लीला करते हैं।

8. श्री भरत :- जिस प्रकार विराट में दो बल (*1.* प्रकाश बल + चुम्बकीय बल तथा *2.* गुरुत्व बल) स्थित हैं, ठीक इसी प्रकार से परमाणु (Atom) के भीतर भी दो बल स्थित रहते हैं - *(i)* नाभिकीय बल (Nuclear force)[c] *(ii)* क्षीण बल (Weak force)। सम्पूर्ण पदार्थ जगत का निर्माण अणु (Molecule) एवम् परमाणुओं (Atoms) के संघटन से होता है। पृथ्वी पर विविध प्रकार के भोज्य पदार्थों की उत्पत्ति इन्हीं अणु-परमाणुओं से ही होती है तथा एलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन एवम् न्यूट्रॉन के संयोग से चार प्रकार के जीवों - उद्भिज (वनस्पति जगत), स्वेदज (गर्मी-सर्दी से उत्पन्न होने वाले कीड़े मकोड़े), अण्डज (अण्डे से उत्पन्न होने वाले प्राणी) तथा जरायुज (स्त्री योनि से उत्पन्न होने वाले पशु एवम् मनुष्य आदि) की उत्पत्ति होती है। क्योंकि पूरी सृष्टि में यह नियम है, कि बड़ा जीव छोटे जीव को खाता है अर्थात् बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है तथा मनुष्य सबसे श्रेष्ठ प्राणी है, अतएव वह अन्य सभी प्राणियों को खा सकता है। अर्थ यह हुआ, कि सारी सृष्टि ही एक-दूसरे का भोजन है तथा इस भोजन को उत्पन्न करने में शक्ति का स्रोत अर्थात् परमाणु में स्थित **'नाभिकीय-बल'** है, अतएव **'नाभिकीय-बल'** सम्पूर्ण जीवों के भरण-पोषण के लिए उत्तरदायी है। श्री भरत लाल जी इस नाभिकीय बल के प्रतीक हैं। इस बात की पुष्टि गोस्वामी तुलसीदास जी 'रामचरितमानस' में वशिष्ठ मुनि के माध्यम से निम्न प्रकार से करते हैं।

चौ. :- ***विश्व भरन पोषण कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई*** [d] **।।**

---

a *श्रीमद् भागवत महापुराण, द्वितीय खण्ड, पन्द्रहवाँ संस्करण, गीताप्रेस, गोरखपुर, वि0सं0 2047 पृष्ठ 122-123*

b. ..... These interactions (Forces) seem to fall into four categories with markedly different interaction strengths :

1. The strong interaction (Force)
2. The electromagnetic interaction (Force)
3. The weak interaction (Force)
4. The gravitational interaction (Force)

Among them the electromagnetic force and gravitational force are the most familiar, because they are experienced in the large-scale world (Macro). The gravitational interaction (force) acts between all particles, but is so weak, that it can not be detected experimentally ..... but in the macroscopic world massive bodies produce the force of gravity, which is the dominating force in the universe at large Electromagnetic force takes place between all charged particles, chemical processes and formation of all atomic molecular structures.

P. 253, Tao of Physics. 3rd Edition Publishers M/s Flamingo

c. The strong or nuclear force, the strongest of all in nature holds the protons and neutrons together in the atomic nucleus.

P. 253, Tao of Physics, 3rd Edition Publishers M/s Flamingo

d *श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दो. 196-197 के मध्य*

अर्थ :- (श्री वशिष्ठ मुनि चारों भाइयों का नामकरण करते हुए वर्णन करते हैं, कि) जो विश्वभर का भरण-पोषण करता है, उसका नाम भरत है। (परमाणु की नाभि में एक करोड़ एलेक्ट्रॉन वोल्ट का नाभिकीय बल निहित रहता है, अतएव इसी नाभिकीय बल से शक्ति प्राप्त करके सम्पूर्ण पदार्थ जगत का सृजन होता है।)

8(a) श्री शत्रुघ्न : श्री भरतलाल जी की भाँति ही श्री शत्रुघ्न लाल जी भी अयोध्या में रहकर श्री भरत जी की आज्ञानुसार प्रजा पालन करने में भरत जी का पूरा-पूरा सहयोग करते हैं। श्री रामचरित मानस में श्री शत्रुघ्न जी का वशिष्ठ जी द्वारा नामकरण किए जाने पर निम्न प्रकार से वर्णन मिलता है।

चौ. :- ***जाके सुमिरन ते रिपु नासा। नाम शत्रुघ्न वेद प्रकासा*** [a] ।।

चौ. :- ***भरत शत्रुघ्न दूनउ भाई। प्रभु सेवक जसि प्रीति बढ़ाई*** [b] ।।

अर्थ : जिनका स्मरण करने मात्र से शत्रुओं का नाश हो जाता है, उनका वेदों में प्रसिद्ध नाम शत्रुघ्न है। भरत तथा शत्रुघ्न दोनों भाइयों में स्वामी और सेवक जैसी प्रीति है।

ऊपर अनुच्छेद 8 (आठ) में यह बतलाया जा चुका है, कि परमाणु के भीतर दो बल स्थित है (i) नाभिकीय बल एवम् (ii) क्षीण बल [c]। श्री भरत लाल जी नाभिकीय-बल के तथा श्री शत्रुघ्न जी क्षीण-बल के मानवीकृत प्रतीक हैं।

श्रीरामचरित मानस में श्री शत्रुघ्न जी का दूसरा नाम रिपुहन अथवा रिपुदमन भी मिलता है। इस नाम के अनुरूप उनका एक अन्य रूप देखने को मिलता है, कि जब वे कैकेयी तथा मन्थरा की कुटिलता पर क्रोधित हो उठते हैं तथा मन्थरा को दण्ड देने लगते हैं और उसको चोटी पकड़ कर घसीटते हैं, तब भरत जी दया करके उसे छुड़ा देते हैं। यह संदर्भ निम्न प्रकार से है :—

चौ. :- ***सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी। लगे घसीटन नख-सिख झोंटी।।***

चौ. :- ***भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई*** [d] ***। कौसिल्या पहिं गे दोउ भाई।।***

अर्थ :—शत्रुघ्न जी उसकी (मंथरा) की यह बात (कि मैंने क्या बिगाड़ा है?) सुनकर तथा उसे नख से शिखा तक दुष्ट जानकर झोंटा पकड़ कर घसीटने लगे, तब दयानिधि भरत जी ने उसको छुड़ा दिया, तत्पश्चात् दोनों भाई तुरंत कौशल्या के पास गये। उपरोक्त साहित्यिक रचना को निम्न वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर गढ़ा गया लगता है।

अणु के भीतर प्रोटॉन तथा न्यूट्रॉन कण निरन्तर मीसॉन (Meson) वर्ग (Pion, Kaon, eta) के कणों का विसर्जन करते हैं तथा उन्हें परस्पर शीघ्र ही अपने में समाहित भी कर लेते हैं। सम्भव है कि क्षीण-बल [e] (Weak Force) के कारण मीसॉन वर्ग के कणों का निःसरण

---

a&b. श्रीराम चरित मानस बालकाण्ड के क्रमशः दो 196-197 एवम् दो 197-198 के मध्य।

c The leptons (neutrino, electron, muon, Tau) are involved in the fourth type of interaction (weak force), These are so weak and have such a short range, that they can not hold any thing together

P- 254, Tao of Physies, 3rd edition publishers M/s Flamingo

d. श्रीरामचरित मानस अयोध्याकाण्ड दो : 162-163 के मध्य

e. Nucleons (Protons and neutrons) on the other hand interact through the much stronger nuclear force or Strong interaction, which manifests itself as the exchange of new kind of particles called 'meson' (Pion, Kaon, eta)------ the closer the nucleons are to each other, the more numerous and heavy mesons they exchange

P- 240 Tao of Physies 3rd edition publishers M/s Flamingo.

होता हो, परन्तु नाभिकीय बल (Nuclear force) के कारण वे कण पुनः परस्पर समाहित हो जाते हों, क्योंकि जब वही न्यूट्रॉन कण नाभि से बाहर स्थित होता है, तब क्षीणबल के प्रभाव से 1000 सेकंड में तीन टुकड़ों प्रोटॉन, एलेक्ट्रान एवम् न्यूट्रीनों कणों में टूट जाता है। इस प्रक्रिया को Beta Decay[a] कहा जाता है।

9. इन्द्र देव :- आधुनिक विज्ञान के अनुसार फोटॉन, एलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन, न्यूट्रीनो तथा इनके प्रतिकण (Anti-particles) पूरी सृष्टि काल तक रहने वाले स्थायी कण हैं। इनके अतिरिक्त आठ कण और हैं, जिनका जीवनकाल काफी कम है। इन अठारह कणों के पश्चात् दो सौ से भी अधिक कणों [b] (particles) की खोज की जा चुकी है। अधिकांश कण चुम्बकीय विद्युत शक्ति से आवेशित हैं। इन कणों में से कुछ कण (particles) ऐसे हैं, जो विष्णु (सृजन एवम् पालन) बल के पक्ष में क्रियाशील हैं, इन्हें देवताओं की श्रेणी में गिना जाता है। कुछ दूसरे कण भी हैं, जो सृष्टि की संहार प्रक्रिया में संलग्न रहते हैं; इन्हें असुर (दानव) श्रेणी में माना गया है। ये सभी कण ब्रह्माण्ड में आकाशगंगाओं से निरन्तर विकीरित किए जा रहे हैं तथा ये कण परस्पर संघर्षरत भी हैं। इसी को देवासुर संग्राम कहा गया लगता है *(इस विषय पर सप्तम सत्र में विशेष चर्चा की गयी है)*। पृथ्वी पर दृश्य रूप में मुख्य देवता, जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश, मेघ हैं; जो सृजन और पालन में पूरी तरह से सहायक हैं। इन सभी देवों के आधार में चुम्बकीय विद्युत शक्ति निहित है, परन्तु मेघों द्वारा वर्षा से धन-धान्य, फल-फूल एवम् सभी प्रकार की वनस्पति की उत्पत्ति के साथ-साथ मेघों में करोड़ों वोल्ट की तड़ित (जो तड़-तड़ ध्वनि करे) विद्युत की उत्पत्ति भी होती है, जो सभी देव शक्तियों से भी अधिक शक्तिशाली है, अतएव गरजते हुए मेघ को सभी देवों का शासक (राजा) इन्द्र के नाम से कहा गया है। क्योंकि विद्युत में संहारक शक्ति है, अतएव इन्द्र के हाथ में प्रदर्शित बज्र, इन्द्र की संहारक शक्ति का प्रतीक है।

पृथ्वीवासियों के लिए आज यह एक सामान्य-सा अनुभव है, कि विद्युत शक्ति ने दैनिक जीवन में उपयोगी साधनों, जैसे - हीटर, एयर कन्डीशनर्स, फ्रिज, टी.वी., सिनेमा, डिस्को, म्यूज़िक, सर्वत्र प्रकाश आदि के द्वारा मानव जीवन को बेहद विलासितापूर्ण बना दिया है। ***'यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'*** सिद्धान्त के आधार पर ऐसी ही सुखद स्थिति की विराट में कल्पना कर ली गयी है, कि इन्द्र के दरबार में गन्धर्वों द्वारा गायन, सुन्दरियों के हाव-भाव पूर्ण नृत्य, सोमरस का पान, छप्पन प्रकार के भोजन आदि उपलब्ध हैं अर्थात् स्वर्ग लोक में प्राप्त होने वाले सुख, इन्द्रियगत सुखों की पराकाष्ठा के प्रतीक हैं।

मानव अपने जीवन में जिन-जिन कल्पनाओं में खोया रहता है तथा उसके लिए उद्यम करता है, उसे वह पृथ्वी लोक में अथवा मृत्यु के पश्चात् स्वर्गलोक में प्राप्त कर लेता है। अवचेतन मन की सृजनात्मक शक्ति के कारण ऐसा होता है। मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा सूक्ष्म जगत में

---

a The weak interaction (weak Force) manifests only in certain kind of particle collisions and in particle decays, such as the 'beta decay',
Page-254 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo

b Thus the number of particles increased from three to six by 1935, then to eighteen by 1955 and to-day, we know over two hundred elementary particles.
(Page-86 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)

पहुँच कर अपनी वासनाओं (चित्त में संग्रहीत कामनाओं) के अनुरूप पुण्य कर्मों के आधार पर अपने मन में भोग पदार्थों के आनन्द का अनुभव करती है। इसी को स्वर्ग का भोग (आनन्द) कहा गया लगता है। हमारी आकाशगंगा की परिक्रमा के साथ पृथ्वी पर मानवों की प्रवृत्ति अर्थात् सोचने-समझने के तौर तरीके बदलते रहते हैं, परिणामस्वरूप भौतिक सुख-सुविधाओं तथा भोग-विलास के पदार्थों का प्रकार बदलता रहता है। सुख-सुविधाओं तथा भोग-विलास के साधन का प्रतीक इन्द्र है, जो एक निश्चित अवधि के पश्चात् नष्ट हो जाता है अर्थात् हर मनवन्तर में इन्द्र बदल[a] जाता है। यह क्रम सतत् चलता रहता है। उसी प्रकार से इन्द्रिय भोगों में लिप्त रहने से मानव का भी पतन हो जाता है। पुराण में कथा आती है, कि देवों और दानवों का परस्पर संघर्ष चलता रहता है तथा आसुरी शक्तियाँ (इन्द्रियगत वासनाएं) बारम्बार इन्द्र का इन्द्रासन छीन लेती है, तब भगवान विष्णु देवों की रक्षा हेतु अवतरित होते हैं और असुरों का विनाश हो जाता है। मानव के मनों में भी सात्विक प्रवृत्तियों एवम् दुष्प्रवृत्तियों का निरन्तर संघर्ष चलता रहता है, परन्तु जब मानव के हृदय में ईश्वरीय विचारों का प्राकट्य (अवतरण) होता है तब आसुरी विचारों का नाश हो जाता है तथा मानव को शान्ति की प्राप्ति होती है, अर्थात् हमारी आत्मा (राम) का दस प्रकार की दुष्प्रवृत्तियों (काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर (आलस्य), मोह, घृणा, ईर्ष्या, राग और द्वेष से निरन्तर संघर्ष चलता रहता है, यही राम और रावण का सतत् चलने वाला युद्ध है।

***9(a)* एरावत हाथी** :- इन्द्र का वाहन एरावत हाथी भी अपने स्वामी की भाँति ही अत्यन्त बलशाली है।

10. श्री हनुमान :- जिस प्रकार मानव मन में सदैव परिवर्तन होता रहता है अर्थात् मन की प्रवृत्ति चञ्चल होती है, ठीक उसी प्रकार ***'यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'*** सूत्र के अनुसार परमात्मा का मन भी चञ्चल होना चाहिए। क्योंकि चञ्चलता वानर का प्रधान गुण है, अतएव श्री हनुमान जी (वानर) वैश्वानर (परमात्मा) के मन के प्रतीक हैं। परन्तु महामानव का मन महान बलशाली भी होना होगा, अतएव ग्रंथों में श्री हनुमान जी को अत्यन्त बलशाली बतलाया गया है। कथा है, कि उन्होंने अपनी बाल्यावस्था में ही सूर्य भगवान को निगल लिया था, तब सभी देवताओं की अनुनय विनय पर श्री हनुमान जी ने उन्हें मुक्त किया। क्योंकि सूर्य तथा चन्द्र की गति से काल गणना की जाती है, अतएव सूर्य को निगलने का अर्थ है, कि परमात्मा के मन ने संकल्प किया और काल (समय) की गति ठहर गयी। इसी प्रकार जब साधक की समाधि लग जाती है तब उसका

संकटमोचन श्री हनुमान जी

चित्र : 5.06

---

a *श्रीमद् भागवत महापुराण, प्रथम खण्ड, पन्द्रहवाँ संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि. सं. 2047 पृष्ठ-248*

'मन' अमन बन जाता है, अर्थात् मन की गति ठहर जाती है, तब काल की गति भी ठहर जाती है। उस स्थिति में साधक देश (space) एवम् काल (time) से परे चला जाता है।

श्री हनुमान जी को सीता माता ने अजर (कभी वृद्ध न होने), अमर (कभी मृत्यु को प्राप्त न होने) एवम् गुणों के निधान तथा श्रीराम सदैव उन पर कृपा बनाए रखें, ऐसा वरदान दिया था।

चौ. :- ***अजर अमर गुननिधि सुत होऊ। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू*** [a] ।।

अणिमा (अणु जैसा हल्का बन जाना), गरिमा (पर्वत जैसा भारी बन जाना), लघिमा (छोटे से छोटा रूप धारण कर लेना) आदि आठों प्रकार की सिद्धियाँ तथा नौ प्रकार की निधियों की शक्ति भी श्री हनुमान जी को प्राप्त थी। वे अखण्ड ब्रह्मचारी थे। इन शक्तियों की प्राप्ति में कदाचित् अखण्ड ब्रह्मचारी होना एक आवश्यक शर्त है। रामचरितमानस में वर्णन आया है, कि जब देवताओं ने श्री हनुमान जी की बुद्धि की परीक्षा लेने हेतु **'सुरसा'** नामक देवताओं की माता को भेजा था, तब हनुमान जी ने महिमा (बड़े से बड़ा रूप धारण कर लेने) तत्पश्चात् लघिमा (छोटे से छोटा रूप धारण कर लेने) शक्तियों का प्रयोग करके अपनी बुद्धिमत्ता से सुरसा को चकित कर दिया था। समुद्र को पार करते हुए भी वे पर्वताकार शरीर धारण करके आकाश मार्ग से बिना किसी सहायता के वायु वेग से उड़े जा रहे थे। श्री हनुमान जी ने अणिमा शक्ति द्वारा अत्यन्त सूक्ष्म शरीर धारण किया तथा लंका में प्रवेश करने का प्रयास कर ही रहे थे, कि लंकिनी नामक राक्षसी ने उन्हें पहचान लिया। श्री हनुमान जी ने उस पर मुष्टिक का प्रहार किया, जिससे वह बेचैन हो गयी और उसने हनुमान जी को लंका में प्रवेश का मार्ग दे दिया। उपरोक्त सब विवरण यह बतलाने के लिए है, कि परमात्मा का मन कितना शक्तिशाली होता है और यदि साधना (ध्यान की शत प्रतिशत एकाग्रता) द्वारा मानव, श्री हनुमान जी (परमात्मा के मन) से जुड़ (योग कर ले) जाये तो उपरोक्त सभी शक्तियाँ साधक को प्राप्त हो सकती हैं।

लंका दहन करके उन्होंने भगवान रुद्र (विनाशक शक्ति) का कार्य किया था, अतएव उन्हें रुद्र का अवतार भी कहा गया है। सुग्रीव तथा विभीषण को राम से मिलवाने में तथा तुलसीदास जी को भगवान राम के दर्शन करवाने में श्री हनुमान जी का विशेष योगदान था। सीता माता की खोज करना और उन्हें सान्त्वना देना, अशोक वाटिका को उजाड़ना, लंका दहन, रावण को समझाना, चार सौ योजन के समुद्र को खेल-खेल में पार कर जाना, अहिरावण एवम् अनेक राक्षसों का वध करना आदि अति बलशाली कार्य उन्होंने किए, फिर भी अभिमान से बहुत दूर ही रहे अर्थात् श्री हनुमान जी अकर्त्तापन के भाव के प्रतीक हैं। नम्रता एवम् विनयशीलता तथा श्रीराम की अनन्य भक्ति जैसे महान गुणों से भरपूर श्री हनुमान जी देवताओं में अग्रणी देव माने गये हैं।

श्री हनुमान जी का रंग नारंगी है जो शौर्य, ओज, तेज एवम् बल का प्रतीक है। इस रंग की आवृत्ति $5.10–4.60\times10^{14}$ चक्र प्रति सेकंड अर्थात् तरंग दीर्घता 5900Å – 6500 Å है। श्री हनुमान जी को श्रीराम का अनन्य सेवक बतलाया गया है अर्थात् परमात्मा का मन पूर्ण रूप से उनके चित्त के अधीन कार्य करता है अथवा पूरी तरह से नियन्त्रण में है। हर मानव को परमात्मा के मन की भाँति ही अपने मन को नियन्त्रण में रखने का प्रयास करना कर्त्तव्य है। श्री हनुमान जी की उपासना से साधक को अपने मन पर नियन्त्रण कर सकने की क्षमता का विकास होने लग

---

a *श्रीरामचरितमानस सुन्दरकाण्ड दो. 16-17 के मध्य*

जाता है। मन पर नियन्त्रण होते ही साधक को सभी प्रकार की सिद्धियाँ स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं। श्री हनुमान जी शौर्य, तेज और बल के निधान होने के कारण भक्तों की संकटों से रक्षा करने के लिए **'संकटमोचन'** नाम से विशेष रूप से जाने जाते हैं। मानव मन का उद्गम सुषुम्ना पर स्थित मणिपुर चक्र पर है। तुलसीकृत हनुमान चालीसा, हनुमान अष्टक, हनुमान बाहुक द्वारा श्री हनुमान जी की उपासना करने से साधक के मणिपुर चक्र (चित्र संख्या 2.12) की शक्ति जागृत होने लगती है, जिससे उसकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है और वह ईश्वर प्राप्ति की ओर भी अग्रसर होने लगता है।

11. श्री गणेश जी :- श्रीगणेश जी के शरीर का अधोअंग मानव शरीर है तथा ऊपरी भाग हाथी के मस्तक से निर्मित है। श्रीगणेश जी परमात्मा (परब्रह्म) की बुद्धि के प्रतीक हैं। यह प्रतीक अनेक अर्थों की ओर संकेत करता है। हाथी सबसे बुद्धिमान पशु है। हाथी के कान बहुत बड़े-बड़े होते हैं, अतएव वह सुन बहुत सकता है परन्तु बोलता कम है। जब कभी भी वह चिंघाड़ता है, तब पूरा जंगल काँप उठता है। प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए यह गुण अनुकरणीय है, कि वह दूसरों की बातों को सुने अधिक परन्तु बोले तभी, जब वह सब की बातों को सुनकर मन में ध्यान से पचाकर शान्त भाव से निर्णय लेने की स्थिति में हो, नहीं तो बात-बात में बीच में बोल उठना बुद्धिमत्ता नहीं है। पेट का बड़ा होना, सभी की बातों को गम्भीरता पूर्वक पचा सकने की क्षमता का प्रतीक है। हाथी की सूँड़ के होने का अर्थ है, कि जैसे वह दूर-दूर तक सूँड़ से सूंघता रहता है तथा चींटी जैसी हर सूक्ष्म वस्तु को दूर से सूंघकर जान लेता है, उसी प्रकार से हर बुद्धिमान व्यक्ति को पूरी तरह से सावधान रहना आवश्यक है। छोटी-छोटी आँखें सामने वाले की बातों को सुनकर एकाग्रतापूर्वक मनन करने की प्रतीक हैं।

पूरी सृष्टि के सृजन, संचालन एवम् विघटन की पृष्ठभूमि में परब्रह्म का महान बुद्धि-कौशल अव्यक्त रूप से कार्य करता रहता है। अरबों आकाशगंगाएं जिसमें खरबों सूर्य तथा अनन्त रोड़े पिण्ड गतिशील रहते हैं, परन्तु क्या मजाल कि बिना पूर्व योजना के कहीं भी कोई टक्कर हो जाए। यह एक महान आश्चर्य है। ***इसी आश्चर्य को समझ कर ही सम्पूर्ण मानव जाति ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करने के लिए विवश है।***

पुराण की एक कथा के अनुसार देवताओं के बुद्धि कौशल की परीक्षा लेने हेतु एक बार सभी देवताओं की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आयोजन की शर्त यह रखी गयी, कि जो प्रतियोगी ब्रह्माण्ड की तीन परिक्रमाऐं लगाकर पहले लौट आयेगा, पुरस्कार स्वरूप उसकी पूजा सबसे पहले की जायेगी। बुद्धि के धनी गणेश जी ने ब्रह्माण्ड के प्रतीक 'शिव' एवम् 'पार्वती' की तीन परिक्रमाऐं कीं और मोदक का लड्डू सर्वसम्मति के निर्णय से प्राप्त किया। अपने माता-पिता की भाँति श्री गणेश जी भी निरन्तर राम नाम का भजन करते रहते हैं।

विघ्नहर्त्ता श्रीगणेश जी

चित्र : 5.07

क्योंकि ***'राम'*** प्रकाश के प्रतीक हैं तथा श्रीगणेश जी निरन्तर ज्ञान में रहते हैं, अतएव भावातिरेक में नहीं बहते। उनके इस महान गुण तथा अप्रत्याशित बुद्धिकौशल के कारण श्री गणेश जी की किसी भी कार्य के आरम्भ करने से पूर्व पूजा-अर्चना की जाती है, ताकि कार्य बिना बाधा के पूरा हो जाये। किसी भी कार्य को करने में बाधाएं तो आती ही हैं, परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति अपने बुद्धि-कौशल से उन्हें सरलता से सुलझा लेता है। श्री गणेश जी इसीलिए विघ्नहर्ता के रूप में पूजे जाते हैं। संक्षेप में बुद्धि-कौशल का अर्थ है - *(i)* सुनना अधिक, बोलना कम *(ii)* सोच-समझ कर बोलना *(iii)* नपे-तुले शब्दों में बोलना *(iv)* शान्त और गम्भीर रहना *(v)* विरोधियों की खोज-खबर रखना तथा विरोध को नष्ट करते रहना और *(vi)* परमात्मा (राम) का सदैव स्मरण करते रहना।

दोनों हाथों में मोदक के लड्डू का अर्थ है, कि बुद्धिमान व्यक्ति सदैव सफलता प्राप्त करता है और पुरस्कृत होता रहता है। श्री गणेश जी को हरी-हरी दूर्वा चढ़ाकर पूजा की जाती है तथा मोदक (बूँदी) का लड्डू अर्पित किया जाता है। VIBGYOR की सात रंगों की पट्टिका में हरे रंग की आवृत्ति $6.10 - 5.40 \times 10^{14}$ चक्र प्रति सेकंड की है अथवा तरंग दीर्घता 4900 Å–5500 Å है। हाथी का रंग भी हरा जैसा होता है। हरे रंग पर ध्यान केन्द्रित करने से मन की अवस्था शान्त बनती है तथा शान्त मन ही सटीक निर्णय ले सकता है अर्थात् वह व्यक्ति बुद्धिमान स्वतः बनने लगता है। गणेश जी की मूर्ति पर मन को एकाग्र करने से साधक परमात्मा के आज्ञा केन्द्र से जुड़ जाता है और तब साधक में गणेश जी के गुणों का आविर्भाव होने लगता है।

11(a) **वाहन चूहा :-** चूहा स्वभाव से गुप्तचर की भाँति बहुत चौकन्ना होता है तथा ज़मीन के अन्दर कुतर-कुतर कर विघ्न-बाधाओं को पार करता हुआ सुरंग जैसा मार्ग भी बना लेता है तथा अपने स्वामी को छोटे से छोटे स्थान तक पहुँचाने में सक्षम है। अतः चूहा विघ्न-बाधाओं को पार करने में कुशल होने के कारण अपने स्वामी का परिपूरक (complementary) है।

12. भगवान शंकर का ताण्डव नृत्य :- प्रत्येक आकाशगंगा का निश्चित अवधि में सृजन एवम् विघटन एक अनवरत प्रक्रिया है। सृष्टि के विनाश हेतु भगवान शंकर से उत्पन्न भगवान रुद्र प्रलय काल में रौद्र रूप धारण करके ताण्डव नृत्य करते हैं, इस प्रकार सृष्टि का विनाश हो जाता है। सृष्टि का विनाश ग्यारह प्रकार से होता है [a]। कदाचित् शंकर शब्द का एक अर्थ

भगवान शंकर का ताण्डव नृत्य

चित्र : 5.08

a इस सम्बन्ध में **चतुर्थ सत्र** में 'काल निर्णय' शीर्षक के अन्तर्गत विस्तार से चर्चा की गयी है।

"शमम् करोति यः सः शंकरः" भी है अर्थात् जो सम्पूर्ण सृष्टि को अपने रौद्र (विनाशकारी) रूप के द्वारा सम अवस्था में ले आए, वह शंकर है। भगवान शंकर का तांडव नृत्य करती मुद्रा में रौद्र रूप दर्शाता एक चित्र *Tao of Physics* पुस्तक से चित्र संख्या *5.08* पर उद्धृत है [a], भगवान शंकर के इस चित्र के कई अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे ऊपर वाले दाएं हाथ के डमरू द्वारा सृष्टि के निर्माण के प्रारम्भ में घोर ध्वनि होती है और सृष्टि का सृजन इस ध्वनि के पश्चात् आरम्भ हो जाता है। सृष्टि के विनाशकाल में भी इसी प्रकार डमरू ध्वनि होती है और भारी नाद के बाद सृष्टि का विनाश आरम्भ हो जाता है। ऊपर के बाएं हाथ में जलती मशाल जैसी जीभ इस प्रकार सृष्टि के विनाश का संकेत देती है तथा ऊपर उठा हुआ दाँया हाथ भक्तों को अभय मुद्रा का संकेत करता है। चौथा बाँया हाथ नीचे उठे हुए पैर की ओर इशारा करता है, जबकि उठा हुआ पैर 'माया' से 'मुक्ति' की ओर इंगित करता है। भगवान रुद्र अज्ञानता रूपी असुर पर नृत्य करते दिखलाए गये हैं, जिसका अर्थ है, कि माया से मुक्ति पाने हेतु अविद्या का नाश करना आवश्यक है। उपरोक्त अर्थ डॉ. फ्रिटजोफ कापरा की पुस्तक *Tao of Physics* से लिया गया है [b]।

13. भगवान शंकर का पार्वती के साथ नृत्य :-गामा तरंगों से शिव लोक, विष्णु लोक एवम् ब्रह्म लोकों का आविर्भाव हुआ है, इस प्रकार की चर्चा प्रथम एवम् चतुर्थ सत्र में की जा चुकी है। तत्पश्चात् हमारे सूर्य से ग्रहों, पृथ्वी, चन्द्र आदि की उत्पत्ति हुई। आज के परिदृश्य में चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है तथा पृथ्वी सहित सभी ग्रह, सूर्य की प्रदक्षिणा करते हैं। हमारे सूर्य सहित ब्रह्मलोक के एक खरब से भी अधिक सूर्य एवम् अगणित रोड़े-पिण्ड शिवलोक का निरन्तर चक्कर लगाते रहते हैं और आकाशगंगाओं से विकीरित अणु-परमाणु किसी न किसी केन्द्र का चक्कर लगाते हैं तथा विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न करते हैं। हमारी आकाशगंगा के शिवलोक में निहित अव्यक्त चेतनबल भगवान शिव अपनी पत्नी पार्वती समेत एवम् अन्य सभी आकाशगंगाओं सहित अव्यक्त चैतन्य सत्ता भगवान श्रीकृष्ण (वैश्वानर) का चक्कर लगाती हैं। इस प्रकार महेश्वर तथा उनकी अर्धांगिनी (प्रकृति) अर्थात् मातृशक्ति लगातार नृत्य करते रहते हैं। इसे अर्धनारीश्वर का कलात्मक रूप देकर अनेक कलाकृतियों का निर्माण किया गया है। इस अर्धनारीश्वर चित्र के भी अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे - सृष्टि निर्माण एवम् पालन में प्रकृति (स्त्री) एवम् पुरुष (परमात्मा) दोनों शक्तियों की

---

a *Page-225 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo.*

b The upper right hand of the God holds a drum to symbolise the primal sound of creation, the upper left hand bears a tongue of flame, the element of destruction. The balance of the two hands represents the dynamic balance of creation and destruction in the world..... The second right hand is raised in the sign of 'do not fear' symbolising maintenance, protection and peace, while the remaining left hand points down to the uplifted foot which symbolizes release from the spell of maya. The god is pictured as dancing on the body of a demon, the symbol of human ignorance, which has to be conquered before liberation can be attained.

(Page 270-271 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)

आवश्यक भूमिका है। सृष्टि निर्माण के पश्चात् सर्वत्र गतिशीलता रहती है तथा प्रकृति का हर कण अपनी धुरी पर तथा किसी अन्य के चारों ओर भी घूमता है। इस प्रकार प्रकृति के संहार होने तक प्रकृति और पुरुष का निरन्तर नृत्य चलता रहता है अर्थात् भगवान शंकर (अव्यक्त परमात्मा) पार्वती (प्रकृति) के साथ सतत् नृत्य करते हैं। ***भारतीयों द्वारा रचित प्रतीकात्मक एवम् कलात्मक शैली में पूरा-पूरा विज्ञान समाहित है।*** ऐसी भाषा शैली जो सुरुचिपूर्ण भी है तथा जनसाधारण को भी समझ आती है, भारतीय मनीषियों की श्रेष्ठतम चिन्तन का परिणाम है। लगभग यही बात डॉ. फ्रिटजोफ कापरा ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *Tao of Physics* में कही है [a]।

14. गंगा नदी :- आकाशगंगा विराट पुरुष अर्थात् अव्यक्त ब्रह्म का प्रकट भौतिक रूप है। यह आकाशगंगा तीनों लोकों अर्थात् ब्रह्मलोक (एलेक्ट्रॉन तारा समूह), बैकुण्ठ लोक (प्रोटॉन तारा समूह) तथा शिवलोक (न्यूट्रॉन तारा समूह) को धारण करती है। जिस प्रकार आकाशगंगा से ऊर्जा (एलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन एवम् न्यूट्रॉन) कणों की निरन्तर (भगीरथ) वर्षा होती रहती है, फलस्वरूप सभी प्राणियों में 'प्राण' का संचार होता रहता है, ठीक उसी प्रकार ऐसी मान्यता है कि गंगा में स्नान करने से तथा उसका जल पीने से **'प्राणशक्ति'** सतेज रहती है। गंगा के जल का एक विशेष गुण यह है, कि वह कभी सड़ता नहीं है तथा उसमें प्रदूषण को नष्ट करने की अद्भुत क्षमता है। इस प्रकार 'गंगा नदी' के गुण (प्रवृत्ति) ***'आकाशगंगा'*** के गुणों से बहुत मेल खाते हैं, अतएव 'गंगा' को **'आकाशगंगा'** का प्रतीक [b] मान लिया गया है।

15. 'गो' (गाय) - मातृभूमि (पृथ्वी) का प्रतीक :- जिस प्रकार पृथ्वी अन्न-जल, फल-फूल का उत्पादन करके पृथ्वी पर निवास करने वाले सभी प्राणियों का भरण-पोषण करती

---

a The dance of Shiva is the dancing universe, the ceaseless flow of energy going through an infinite variety of patterns that melt into one another.
More than that, the dance of creation and destruction is the basis of the very existence of matter. Since all material particles 'self interact' by emitting and reabsorbing virtual particles. Modern physics has thus revealed, that every sub-atomic particle not only performs an energy dance, but also is a pulsating process of creation and destruction.
For the modern physicists, then ***'Shiva's' dance*** is the dance of sub-atomic matter. As in Hindu mythology, it is a continual dance of creation and destruction involving the whole Cosmos..... Physicists have used the most advanced technology to portray the patterns of the cosmic dance. ***The bubble chamber photographs of interacting particles, which bears testimony to the continual rhythm of creation and destruction in the universe are the visual images of the dance of Shiva equalling those of the Indian artists in beauty and profound significance.*** The metaphor of the cosmic dance thus unifies ancient mythology, religious art and modern physics. It is indeed as Coomara Swamy has said, ***Poetry, but none the less Science.***

(Page 271-272 Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s. Flamingo)

b इस प्रतीक के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी प्रथम सत्र में तथा विस्तृत जानकारी पुस्तक के भाग-3 में *'गंगा-आकाशगंगा का प्रतीक'* नामक लेख द्वारा दी गयी है।

है, ठीक उसी प्रकार ***'गो'*** (गाय) मानव जाति का अपने दूध से, गोबर व मूत्र से भरण-पोषण एवम् जीवन रक्षा करती है। पृथ्वी का सबसे बड़ा गुण है **'क्षमा'**। गाय भी सभी पशुओं में निरीह एवम् सरल पशु है, अतएव **'गो'** को **मातृभूमि (पृथ्वी)** का प्रतीक [a] मान लिया गया है।

16. सूर्य देवता :- सूर्य देवता प्रखर प्रकाश अर्थात् ज्ञान के प्रतीक हैं। ज्ञान से नियमों (मर्यादाओं) का आविर्भाव होता है। इसीलिए सूर्य भगवान श्रीराम के कुल देवता हैं तथा भगवान श्रीराम को 'सूर्यवंशी' के रूप में जाना जाता है। सूर्य वंशी का अर्थ हुआ - ऐसा वंश जो ज्ञान (मर्यादा) से ओत-प्रोत हो, इसीलिए 'राम' को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है। चूँकि सूर्य देवता पूरे वर्ष में बारह राशियों (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ एवम् मीन) पर भ्रमण करते हैं, अतः उनकी बारह कलाएं मानी गयी हैं और भगवान श्रीराम को बारह कला के अवतार के रूप में जाना जाता है।

सूर्य के ताप एवम् ऊर्जा से सम्पूर्ण सौर परिवार को ताप, प्रकाश एवम् ऊर्जा प्राप्त होती है। इससे पृथ्वी पर वनस्पतियों, फल-फूलों तथा खेती का उत्पादन होता है और सभी प्राणियों को भोजन प्राप्त होता है। सूर्य को ***'ब्रह्मा'*** कहा जाता है तथा ब्रह्मा विराट पुरुष अर्थात् ब्रह्म की बुद्धि का कार्य करते हैं। इस प्रकार सूर्य पृथ्वी पर स्थित सभी प्राणियों की बुद्धि का नियमन करते हैं।

17. चन्द्र देवता :- जिस प्रकार चन्द्रमा समुद्रों के जल को आकर्षित करता है फलस्वरूप उनमें पूर्णिमा एवम् अमावस्या को ज्वार-भाटा आता है, उसी प्रकार मानव के शरीर में लगभग 80% जल तत्त्व होने के कारण मानव मन चन्द्रमा से विशेष रूप से प्रभावित होता है। चन्द्रमा 'ब्रह्म' (विराट) का मन माना गया है, अतएव चन्द्रमा के माध्यम से 'ब्रह्म' सभी मानवों के मनों पर नियंत्रण रखते हैं। चन्द्रदेव शीतलता अर्थात् शान्ति के प्रतीक हैं। शान्ति से प्रेम का आविर्भाव होता है। इसीलिए चन्द्रदेव भगवान श्रीकृष्ण के कुल देवता हैं तथा भगवान श्रीकृष्ण को 'चन्द्रवंशी' के रूप में जाना जाता है। **'चन्द्र-वंशी'** का अर्थ हुआ - ऐसा वंश जो प्रेम (आकर्षण) से ओत-प्रोत हो। चन्द्रमा एक पक्ष (अमावस्या से पूर्णिमा) तक के सोलह दिनों में, सोलह रूपों में रूपान्तरित होता है अर्थात् वह सोलह कलाओं को प्रदर्शित करता है, इसीलिए भगवान श्रीकृष्ण को सोलह कलाओं का अवतार कहा गया है।

ऐसी मान्यता है, कि चन्द्रमा की अमृतमयी किरणों से शरद पूर्णिमा को अमृत वर्षा होती है तथा चन्द्र किरणों से औषधियों का पोषण होता है।

18. शक्ति (Energy) एवम् बल (Force) :- बल (Force) में स्वतः कार्य करने की क्षमता होती है, जबकि शक्ति अथवा ऊर्जा (Energy) किसी बाह्य बल से प्रेरित किए जाने पर कार्य सम्पादन करती है। विराट (Macro) में दो प्रकार के बल हैं - *(i)* चुम्बकीय विद्युत बल (Electro-magnetic Force) *(ii)* गुरुत्व बल (Gravitational Force) तथा इसी के

---

a इस प्रतीक के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी प्रथम सत्र में एवं विस्तृत जानकारी पुस्तक के भाग-3 में *'गो-मातृभूमि (पृथ्वी) का प्रतीक'* नामक लेख द्वारा दी गयी है।

समानान्तर परमाणु (Atom) में भी दो प्रकार के बल हैं - *(i)* नाभिकीय बल (Nuclear Force) *(ii)* क्षीण बल (Weak Force)। मुख्यतः शक्ति नौ रूपों में प्राप्य है - *1.* स्थिर शक्ति अथवा आद्या शक्ति (Potential Energy) *2.* स्कन्द माता अथवा गतिज ऊर्जा (Kinetic Energy) *3.* ब्रह्मचारिणी (Magnetic Energy) *4.* चन्द्रघंटा (Sound Energy) *5.* महागौरी (Light Energy) *6.* कात्यायनी (Nuclear Energy) *7.* सिद्धिधात्री (Electricity) *8.* कूष्माण्डा (Chemical Energy) तथा *9.* काल रात्रि (Thermal Energy) [a]।

इन सभी ऊर्जाओं को पौराणिकों द्वारा सर्प के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है। कारण यह, कि सर्प की चाल (गति) तथा किसी भी ऊर्जा अथवा बल की चाल एक जैसी होती है। अर्थात् दोनों (सर्प, बल एवम् ऊर्जा) गति करते समय sine wave (∿∿∿) बनाते हैं।

***18(a)* सहस्र फन वाले शेषनाग** :- भगवान विष्णु को सहस्र फन वाले नागों से निर्मित शैय्या (बिस्तर) पर शयन करते हुए दर्शाया गया है। जैसे परमाणु की नाभि में एक करोड़ एलेक्ट्रॉन वोल्ट का नाभिकीय बल प्रोटॉन को धारण करके स्थित है, उसी प्रकार से विराट में प्रोटॉन तारा समूह को ब्रह्माण्डीय नाभिकीय बल (Galactic Nuclear Force) द्वारा धारण किया जाता है, इसी को प्रतीक रूप में सहस्र फन वाले 'शेषनाग' कहा गया है।

***18(b)* शेषनाग** :- ब्रह्मलोक में खरबों सूर्य, धूमकेतु तथा रोड़े-पिण्ड हैं। इन सभी में अपनी विशाल पदार्थ मात्रा (mass) एवम् घूर्णन के कारण आकर्षण शक्ति कार्य करती है, फलस्वरूप सभी सूर्य तथा रोड़े-पिण्ड एक-दूसरे को खींचे रहते हैं। इस आकर्षण बल को गुरुत्वाकर्षण बल के नाम से जाना जाता है। इस गुरुत्वाकर्षण बल (Gravitational Force) का प्रतीक 'शेषनाग' को माना है।

18(c)* गोप-गोपियाँ एवम् महारास** :- भागवत कथा में कहा गया है, कि भगवान श्रीकृष्ण के ***'महारास' में सम्मिलित होने के लिए सभी गोप-गोपियाँ समाज एवम् सांसारिक बन्धनों की परवाह किए बिना ही श्रीकृष्ण की मुरली की तान सुनते ही दौड़े चले जाते थे और ईश्वरीय नृत्य का आनन्द लेते थे।

सृष्टि में अरबों आकाशगंगाएं हैं, जिनमें खरबों सूर्य तथा अनन्त रोड़े पिण्ड हैं। भारतीय मनीषियों के अनुसार ये सभी आकाशगंगाएं निरन्तर किसी अज्ञात केन्द्र का चक्कर लगा रही हैं, मानों सम्पूर्ण विश्व में 'महारास [b]' हो रहा है तथा इस आकर्षण एवम् घूर्णन के केन्द्र में अव्यक्त परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण हैं, जो इस महारास के महानायक हैं। भगवान श्रीकृष्ण विश्व के आकर्षण बल के प्रतीक हैं तथा गोप-गोपियाँ सम्पूर्ण विश्व की आकाशगंगाओं के प्रतीक हैं। आकाशगंगाओं में निहित अनन्त अणु-परमाणुओं की गति के कारण सुमधुर मुरली जैसी ध्वनि उत्पन्न हो रही है। वही मानो श्रीकृष्ण की मुरली की तान है।

19. राशियाँ :- ज्योतिष शास्त्र में बारह राशियाँ मानी गयी हैं। ये बारह (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन) राशियाँ विशिष्ट नक्षत्रों

---

a शक्ति के संस्कृत नाम *'देवी कवच'* के श्लोक संख्या-3,4 एवम् 5 से लिए गये हैं तथा संस्कृत नामों का विज्ञान के नामों से समीकरण अनुमान पर आधारित है।

b इस सम्बन्ध में इसी सत्र में *'महारास'* का एक वैज्ञानिक चित्र संख्या-5.05(a) तथा दूसरा प्रतीकात्मक चित्र संख्या-5.05(b) पर दर्शाया गया है।

(तारों) के समूह का नाम है। विभिन्न नक्षत्रों (तारों) को रेखांकित करने से इनकी आकृति कुछ-कुछ इनके नाम के अनुसार अर्थात् मेष (भेड़), तुला (तराजू), कर्क (केंकड़ा), इत्यादि जैसी मिलती-जुलती सी लगती हैं। भारतीयों ने सभी प्रतीकों का नामकरण बाह्य आकृति एवम् उन राशियों में निहित प्रवृत्तियों के आधार पर किया है। इसका अर्थ यह हुआ,

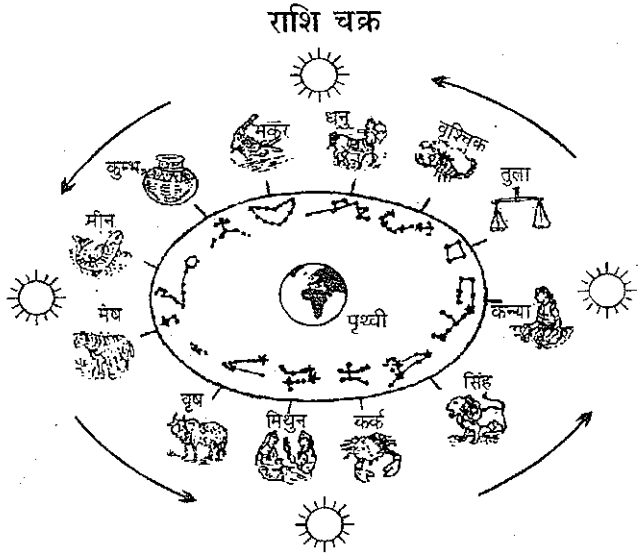

चित्र : 5.09

कि तुला राशि के अन्तर्गत उत्पन्न जातक का स्वभाव तराजू की भाँति तोल-तोल कर जीवन में व्यवहार करने वाला अर्थात् न्यायप्रिय प्रवृत्ति का होता है तथा वृश्चिक राशि वाले का स्वभाव बहुत कुछ बिच्छू की भाँति डंक मारने जैसा अर्थात् हठी एवम् स्पष्टवादी प्रवृत्ति वाला होता है एवम् सिंह राशि के जातक के स्वभाव में निडरता, आत्मविश्वास, दूसरों पर हावी होने तथा हिंसक जैसा हो सकता है, इत्यादि। वस्तुतः इस प्रकार के अर्थ पूर्ण सत्य को नहीं बतलाते, बल्कि किसी भी जातक की प्रवृत्ति उसकी पूरी जन्मकुण्डली में स्थित सभी ग्रहों की युति और उनके संयुक्त प्रभाव के सूक्ष्म अध्ययन से ही आँकी जा सकती है, जो फलित ज्योतिष के गम्भीर अध्ययन से ही सम्भव है, तथापि राशियों के प्रभाव की भूमिका फलित ज्योतिष का आधार है।

20. नक्षत्र :- हमारी आकाशगंगा में एक खरब से भी अधिक सूर्य हैं। नक्षत्र वे सूर्य हैं, जो चन्द्रमा के परिक्रमा पथ में आते हैं। इन नक्षत्रों में अनेक नक्षत्र हमारे सूर्य से भी कई-कई गुना बड़े हैं। भारतीय ज्योतिष में सत्ताइस नक्षत्रों को विशेष रूप से मान्यता प्राप्त है। एक अट्ठाइसवाँ अभिजित नक्षत्र भी माना गया है। भगवान श्रीराम का जन्म इसी अभिजित नक्षत्र के उदय होने के समय माना जाता है, जबकि भगवान श्रीकृष्ण का जन्म रोहिणी नक्षत्र के उदयकाल में माना गया है। क्योंकि चन्द्रमा पृथ्वी की एक परिक्रमा 27 दिन, 7 घण्टे में पूरी करता है, अतएव इसके परिक्रमा वृत्त को सत्ताइस भागों में बाँटा गया है तथा इसके परिक्रमा पथ पर जो नक्षत्र पड़ते हैं उन्हीं नक्षत्रों (तारों) का प्रभाव चन्द्रमा की युति के कारण मानव के चित्त एवम् अहंकार पर पड़ता है। जिस प्रकार विद्युत उत्पाद केन्द्र (पन विद्युत संस्थान) से 11,000 वोल्ट्स की विद्युत शक्ति नगरों तक पहुँचती है तत्पश्चात् उसे 220 वोल्ट में परिवर्तित करने के संयंत्र लगे होते हैं, जहाँ से वह घरों तक पहुँचती है, उसी प्रकार नक्षत्रों से मुख्य ऊर्जा शक्ति प्रक्षेपित होती है तत्पश्चात् चन्द्रमा एवम् ग्रहों द्वारा मानवों तक पहुँचती है। ज्योतिष शास्त्र में हमारे सूर्य को ग्रह माना गया है। सूर्य स्वयम् प्रकाशमान है और हमारी बुद्धि पर प्रभाव

डालता है, जबकि अन्य ग्रह सूर्य से प्रकाश लेकर प्रकाशित होते हैं। चन्द्रमा तथा अन्य ग्रह अपनी विशिष्ट आवृत्तियों के कारण पृथ्वी पर सातों रंगों (VIBGYOR) का प्रक्षेपण करके मानव मन पर प्रभाव डालते हैं। यद्यपि मानव कर्म करने के लिए स्वतन्त्र है, तथापि अट्ठाइस नक्षत्रों, हमारे सूर्य, चन्द्रमा तथा ग्रहों के सम्मिलित प्रभाव के कारण पृथ्वी पर ऐसी घटनाओं का सृजन होता है, जिससे मानव अपने द्वारा किए गये कर्मों से उत्पन्न कर्मफलों को विवश होकर भोगता है।

अट्ठाइस नक्षत्रों की सूची निम्न प्रकार से है :-

1. अश्विनी *2.* भरणी *3.* कृतिका *4.* रोहिणी *5.* मृगशिरा *6.* आर्द्रा *7.* पुनर्वसु *8.* पुष्य *9.* आश्लेषा *10.* मघा *11.* पूर्वा-फाल्गुनी *12.* उत्तरा-फाल्गुनी *13.* हस्त *14.* चित्रा *15.* स्वाँति *16.* विशाखा *17.* अनुराधा *18.* ज्येष्ठा *19.* मूल *20.* पूर्वाषाढ़ा *21.* उत्तराषाढ़ा *22.* अभिजित *23.* श्रवण *24.* धनिष्ठा *25.* शतभिषा *26.* पूर्वा-भाद्रपद *27.* उत्तरा-भाद्रपद *28.* रेवती।

उपरोक्त नक्षत्रों को रेखांकित करने से कुछ विशिष्ट प्रकार की आकृतियाँ बनती हैं, जिन्हें बारह राशियों के नाम से जाना जाता है। राशि का अर्थ है 'तारा समूह'। उपरोक्त तथ्यों पर वैज्ञानिक ढंग से अनुसंधान करने की आवश्यकता है।

21. ग्रह :- नौ ग्रह (मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, सूर्य, चन्द्र, राहु एवम् केतु),

ग्रह मण्डल

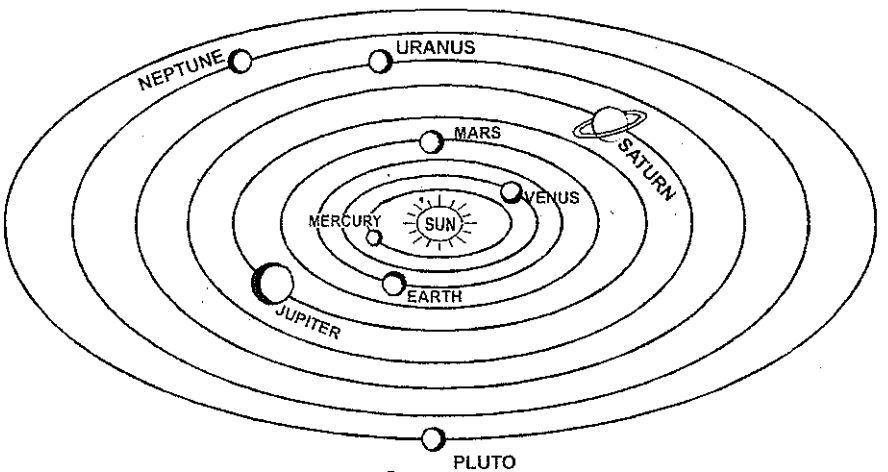

चित्र : 5.10

बारह राशियाँ एवम् अट्ठाइस नक्षत्र मिलकर पृथ्वी पर स्थित सभी मानवों के मन, बुद्धि, चित्त एवम् अहंकार को नियंत्रित करते हैं। इन सभी ग्रहों के अलग-अलग रंग VIBGYOR के क्रम में हैं और ये ग्रह निश्चित गति से घूर्णन करते हुए निरन्तर इन रंगों को पृथ्वी पर प्रक्षेपित करते रहते हैं, परिणामस्वरूप पृथ्वी पर अनेक घटनाओं का जन्म होता है। ये सभी तारा समूह एवम् सूर्य, चन्द्र आदि, काल-चक्र के अंग हैं, ***जो सृष्टि को किसी अव्यक्त शक्ति की प्रेरणा से प्रलयकाल तक चलाते हैं।*** यह चक्र सृष्टि के आदिकाल से अन्त तक बारम्बार इसी प्रकार दुहराया जाता है। राहु एवम् केतु छाया ग्रह हैं अर्थात् इनका भौतिक रूप से कोई

अस्तित्व नहीं है, परन्तु 'विश्वव्यापी चुम्बकीय विद्युत ऊर्जा' के चित्र को ध्यान से देखने से ज्ञात होता है, कि दृश्यमान प्रकाश क्षेत्र (आवृत्ति लगभग $10^{14} - 10^{15}$) के ऊपर का क्षेत्र अति बैजनी (Ultra Violet आवृत्ति लगभग $10^{15} - 10^{16}$) वाला है तथा दृश्यमान प्रकाश क्षेत्र से नीचे वाला क्षेत्र सुर्ख लाल (Infra Red आवृत्ति $10^{12} - 10^{14}$) तक फैला हुआ है। दृश्यमान प्रकाश (visible light) क्षेत्र का अर्थ है, कि जो विश्व (सभी आकाशगंगाओं समेत) हमारी आँखों को दिखलायी पड़ता है, ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर ने उस क्षेत्र में रह रहे सम्पूर्ण मानवों के मनों की रचना $10^{14} - 10^{15}$ आवृत्तियों के मध्य में ही की है, अतएव पूरे विश्वव्यापी चुम्बकीय विद्युत क्षेत्र का इतना-सा अंश ही हमें प्रत्यक्ष दिखलायी पड़ता है। इससे ऊपर अथवा इससे नीचे का भाग नहीं दिखलायी देता, तथापि अन्य ग्रहों द्वारा प्रक्षेपित रंगों की भाँति ही **'अति बैजनी'** एवम् **'अति सुर्ख लाल'** रंग भी मानव जीवन एवम् पृथ्वी पर सभी प्राणियों पर अपना प्रभाव डालते हैं, इसीलिए इन्हें छाया ग्रह की संज्ञा दी गयी है।

इस स्थान पर एक पौराणिक कथा सटीक लगती है, जिसमें अमृत मंथन के बाद अमृत पिलाने का फैसला मोहिनीरूप धारण करके भगवान विष्णु ने अपने हाथों में ले लिया, तब सूर्य एवम् चन्द्र ने शिकायत कर दी, कि एक दैत्य ने देवताओं की पंक्ति में बैठकर अमृत पी लिया है। इस पर भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से उस दैत्य का सिर काट लिया। क्योंकि वह दैत्य अमृत पी चुका था, अतः मरा नहीं और दो भागों में बँट गया। सिर वाले भाग को राहु तथा धड़ वाले भाग को केतु के नाम से जाना गया। इस कथा का कदाचित् अर्थ यह हो सकता है, कि सृष्टि के प्रारम्भ में चुम्बकीय तरंगों के दृश्यमान प्रकाश (visible light) के ऊपर वाला भाग अर्थात् अति बैंजनी प्रकाश (ultra violet) वाली तरंगें अधिक विस्तृत रही होंगी, जो मानव जीवन को अधिक हानिकारक साबित होतीं, जिन्हें ईश्वर ने दो भागों में बाँट दिया - पहला, अति बैजनी (ultra violet) तथा दूसरा, अति लाल (Infra Red)। इस प्रकार अति बैजनी प्रकाश तरंगों का मानव जीवन पर पड़ने वाला दुष्प्रभाव कम हो गया और इस प्रभाव को और अधिक कम करने हेतु आकाश में ओज़ोन (ozone) की छतरी का प्रबन्ध भी कर दिया, ताकि वे परा-बैजनी किरणें ऊपर ही रोक ली जायें। ज्योतिष में इन दोनों कटे भागों को छाया ग्रह माना गया है। ज्योतिषियों ने बहुत गहरी छानबीन के बाद पाया है, कि ये दोनों छाया ग्रह मानव जीवन पर निश्चित प्रभाव डालते हैं तथा जिस प्रकार अन्य ग्रहों से छोड़े जाने वाले रंगों से मानव मन निरन्तर प्रभावित होता रहता है, उसी प्रकार इन दो रंगों - पराबैजनी तथा सुर्ख लाल रंगों से भी मानव मन प्रभावित होते हैं। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु द्वारा मानव जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव उनके द्वारा छोड़े गये रंगों के कारण होता है, अतएव इस बात की पुष्टि इस पौराणिक कथा से हो जाती है। भारतीय वैज्ञानिकों की यह खोज है, कि रंगों की खास आवृत्तियाँ (frequencies) होती हैं और वह इन ग्रहों से आती हैं। इन सबका उन्होंने माप-तोल कर लिया तथा इन सभी ग्रहों की मूर्तियाँ बनायीं तथा उनके दुष्प्रभावों को कम करने के अनेक उपाय, जैसे - दान-पुण्य, व्रत, जप आदि भी खोजे। यह गौरव की बात है, कि भारतीय मनीषियों ने बहुत ही आश्चर्यजनक कार्य किए हैं।

रत्नों के प्रयोग से ग्रहों द्वारा प्रक्षेपित रंगों के प्रभाव को बढ़ाकर मानव जीवन को सुखद बनाया जा सकता है, इसके लिए प्रयोग में आने वाले रत्नों का वर्णन नीचे

तालिका में किया गया है [a]। ऐसा लगता है, कि प्रत्येक रत्न अपना विशिष्ट रंग, उदाहरणार्थ पन्ना हरे रंग को अँगूठी अथवा पेन्डेन्ट के माध्यम से मानव शरीर में प्रवेश दिलाने में सहायता करता है। इस प्रकार निम्न तालिका में दर्शाए गये ये रत्न विशिष्ट ग्रह के रंग के प्रभाव को बढ़ा देते हैं।

	ग्रह का नाम	*वर्ण*	*रंगों का क्रम*	*सम्बन्धित रत्न*
1.	सूर्य	लाल	R	रूबी
2.	चन्द्रमा	नारंगी [a]	O	मोती
3.	मंगल	पीला [a]	Y	मूँगा
4.	बुध	हरा	G	पन्ना
5.	बृहस्पति	नीला [a]	B	पुखराज
6.	शुक्र	आकाशीय नीला	I	हीरा
7.	शनि	श्याम (बैंगनी)	V	नीलम
8.	राहु	परा बैंगनी	U.V.	गोमेद
9.	केतु	सुर्ख लाल	D.R.	लहसुनिया

यदि जातक की जन्मकुंडली में बुध ग्रह निर्बल है, परन्तु लाभप्रद स्थिति पर है, तो पन्ना पहिनने से वह बलवान बनेगा और जातक को लाभ देगा अथवा यदि बुध ग्रह पहिले से ही शक्तिशाली स्थिति में है तो वह और भी शक्तिशाली होकर अधिक लाभदायक सिद्ध होगा। सभी रंगों के रत्नों के प्रयोग का यही सिद्धान्त है।

एक बात और, कि यदि कोई ग्रह जातक की जन्मकुंडली में हानिकारक स्थिति में है तब उस रत्न को पहिनने से लाभ हो सकता है, जो उस ग्रह के हानिकारक प्रभाव को नष्ट करते हों। इस प्रकार की एक तालिका नीचे दी जा रही है, जो ग्रहों की हानिकारक स्थिति को

---

a यह तालिका *The Science of Cosmic Ray Therapy or Tele-therapy by Dr. Benoytosh Bhattacharya* की पुस्तक के पृष्ठ-76 पर आधारित है। लेखक द्वारा पुखराज का रंग नीला, मोती का रंग नारंगी तथा मूँगा का रंग पीला Prism द्वारा जाँचने के पश्चात् लिखा गया है, जबकि साधारण आँखों से देखने पर इनका रंग क्रमशः पीला, सफेद तथा नारंगी दिखलायी देता है। लेखक का कहना है, कि यह आँखों का भ्रम है। प्रिज़्म (Prism) द्वारा की गयी जाँच सही स्थिति को दर्शाती है *।

* The Prism helps our eyes to adjust themselves to the dimensions in which the Cosmic colours move in the outside world and radiate every creation. ***These seven coloured cosmic rays are the principal rays, which in a large measure, are responsible for creation, maintenance and destruction of the universe.*** By surrounding everyone and every creation in the vast universe, they impart them with life, health, youth, old age and death and regulate all beginnings and end.

The human eye is so designed as 'NOT' to receive any coloured rays, which are the real sub-strata behind this vast creation. ***What we see with our eyes is most delusive.*** These delusions in many instances can be corrected by prism. Just as a microscope reveals the presence of bacteria in different things, even so the prism reveals the existence of colours that are not visible to the ordinary eyes.

(Page-36, Science of Cosmic Ray Therapy by Dr. Benoytosh Bhattacharya)

अप्रभावी बनाने में सहायक हो सकती हैं [a]।

	ग्रह का नाम	रत्न जो ग्रह के हानिकारक प्रभाव को नष्ट करता है		ग्रह का नाम	रत्न जो ग्रह के हानिकारक प्रभाव को नष्ट करता है
1.	सूर्य	रूबी	6.	शुक्र	हीरा
2.	चन्द्रमा	लहसुनिया	7.	शनि	नीलम
3.	मंगल	मूँगा	8.	राहु	गोमेद
4.	बुध	पुखराज	9.	केतु	पन्ना
5.	बृहस्पति	मोती			

कुछ ज्योतिषी उपरोक्त विचार से सहमत नहीं हैं। उनका मानना है, कि जिस ग्रह को जो रत्न प्रिय है, वही रत्न उस ग्रह के बुरे प्रभाव को भी ठीक करेगा। इस विवाद को सुलझाने का अभी तक कोई वैज्ञानिक आधार मेरी जानकारी में उपलब्ध नहीं है, अतएव श्रेष्ठ उपाय यह है, कि जातक को स्वयम् उस रत्न को शरीर में पहिनकर (गले में डालकर) कुछ दिन परीक्षा करनी चाहिए, लाभ होने पर स्थायी तौर पर धारण करना उचित होगा।

चतुर्थ सत्र के आरम्भ के पृष्ठों में ग्रहों द्वारा छोड़े गये रंगों से पड़ने वाले प्रभाव को सबल करने के लिए विभिन्न देवी-देवताओं की उपासना का विधान का वर्णन भी किया गया है।

-: कुछ अन्य प्रवृत्ति मूलक प्रतीक :-

22. लोक :- पुराणों में चौदह लोकों का वर्णन आया है। ब्रह्माण्ड में अर्थात् हमारी आकाशगंगा में सात लोक हैं, उनका विवरण निम्न प्रकार से है -

(i) **भूलोक :-** पृथ्वीलोक। पृथ्वी सतत् अपनी धुरी पर तथा सूर्य के चारों ओर परिक्रमा कर रही है।

(ii) **द्युलोक :-** चन्द्रमा एवम् सौर परिवार के सभी ग्रह, जो निरन्तर सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं तथा अपनी धुरी पर भी घूम रहे हैं। चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूम रहा है। ये सारे पिण्ड सूर्य की रश्मियों से प्रकाशित रहते हैं, अतएव इन्हें द्युलोक कहा गया है।

(iii) **अन्तरिक्ष :-** पृथ्वी एवम् स्वर्ग के बीच का स्थान (आकाश) को कहा जाता है। जहाँ पर अनेकानेक आकाशगंगाओं के तारा समूहों का महान प्रकाश है।

(iv) **जनः लोक (ब्रह्म लोक) :-** आकाशगंगा के एक खरब सूर्य (हमारे अपने सूर्य समेत) आकाशगंगा के केन्द्र का चक्कर लगाते रहते हैं। लगता है, कि इसी लोक को अर्थात् प्रकाश लोक को ही 'स्वर्ग लोक' कहा गया है, जहाँ पर पुण्यशील जीवात्माएं कुछ समय के लिए अपने पुण्यों का भोग करने हेतु आती हैं तथा पुण्य क्षीण होने पर पृथ्वीलोक पर कर्मानुसार उनका पुनः जन्म होता है।

(v) **तपः लोक :-** यह लोक 'विष्णु लोक' कहलाता है, जहाँ पर प्रोटॉन तारा समूह स्थित है। यहाँ पर पृथ्वीलोक से वे तपस्वी जीवात्माएं आकर उस समय तक विश्राम करती

---

a संदर्भ : *Page-65, The Science of Cosmic Ray Therapy or Tele-therapy by Dr. Benoytosh Bhattacharya.*

हैं जब तक कि उनकी पृथ्वीलोक में धर्म की पुनर्स्थापना हेतु आवश्यकता नहीं होती। जीवात्माओं का यह मुक्ति स्थान है। इस स्थान का दूसरा नाम **'बैकुण्ठ लोक'** भी है। प्रोटॉन तारा समूह के पीछे निहित अव्यक्त **'विष्णुबल'** सभी जीवात्माओं के कर्मफलों का नियंत्रण करता है। प्रोटॉन तारा समूह अपनी धुरी पर घूर्णन करते रहते हैं।

(vi) **महः लोक :-** इसको 'शिव लोक' भी कहा गया है। यह स्थान न्यूट्रॉन तारा समूह से निर्मित है। जिन जीवात्माओं को भगवान शिव की कृपा से मोक्ष मिल जाता है, वे महान आत्माएं सदैव के लिए जन्म-मरण के चक्र से छूट जाती हैं। न्यूट्रॉन तारा समूह अपनी धुरी पर घूर्णन करते हैं।

(vii) **सत्य लोक :-** यह सर्वव्यापक, अनन्त **'ब्रह्मसत्ता'** का स्थान है। यह लोक सम्पूर्ण रूप से स्थिर एवम् अव्यक्त है। चूँकि ब्रह्म का आधार सत्य है, अतएव इसे **'सत्यलोक'** कहा गया है।

परिकल्पना :- ''यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'' सूत्र के अनुसार उपरोक्त सातों लोकों के समानान्तर मानव शरीर में भी सात लोक [a] (चक्र) हैं। उनका विवरण निम्न प्रकार से है :-

क्रम सं.	*चक्र का नाम*	*विवरण*	*स्थान*
1.	मूलाधार चक्र	3½ लपेटे वाली आकाशगंगा की शक्ल जैसी पूर्व जन्म के संस्कारों की वाहक, सत, रज, तम तरंगों से निर्मित 'कुंडलिनी'	मेरुपुच्छ सुषुम्ना पर
2.	स्वाधिष्ठान चक्र	नाभि से नीचे (अपान संस्थान)	सुषुम्ना पर
3.	मणिपुर चक्र	नाभि के पीछे–'समान संस्थान'	सुषुम्ना पर
4.	अनाहत चक्र	छाती के मध्य (प्राण एवम्	सुषुम्ना पर
5.	विशुद्धि चक्र	गले के पीछे व्यान संस्थान)	सुषुम्ना पर
6.	आज्ञा चक्र	पश्चात् मस्तिष्क (चित्त) (उदान	भौंहों के मध्य पीछे सुषुम्ना पर
7.	सहस्रार	मेरु शिखर (कपाल) संस्थान)	कपाल (Cortex) पर

सहस्रार से जो ब्रह्माण्डीय ऊर्जा प्रवेश करती है, उसे उपरोक्त चक्र घूम-घूम कर विभिन्न अंगों को बाँटते हैं। इस प्रकार सातों चक्र ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से क्रियाशील रहते हैं। परन्तु यदि किसी जीर्णरोग (chronic disease) के कारण विशिष्ट चक्र शिथिल हो गया हो अथवा अवरुद्ध हो गया हो, तो ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का प्रवाह कुंडलिनी तक पूरा नहीं पहुँच पाता। पूर्ण स्वस्थ व्यक्ति की ब्रह्माण्डीय शक्ति कुंडलिनी तक पहुँचती है और इस प्रकार वह व्यक्ति सदैव प्रसन्न चित्त रहता है। आध्यात्मिक साधनाओं की सफलता का उपरोक्त रहस्य समझ कर ऐसे उपाय करने चाहिए, ताकि व्यक्ति सदैव प्रफुल्लचित्त बना रहे, यही जीवन का आनन्द है और चरम लक्ष्य भी है।

a सातों चक्रों का विवरण सहित चित्र द्वितीय सत्र में चित्र संख्या 2.12 पर है।

मुण्डकोपनिषद् [a] (2.1.8) के अनुसार मानव के अन्तर में सात चक्रों के रूप में सात लोक स्थित हैं। इस प्रकार आकाशगंगा के सात लोक तथा मानव के अन्तर में स्थित सातों चक्रों को मिलाकर कुल चौदह लोक माने गये लगते हैं।

23. सप्त ऋषि :- वृहदरण्यकोपनिषद् के अनुसार सात ऋषिगण - नाक, कान, जीभ, आँखें आदि इन्द्रियाँ ही हैं *(वृहदरण्यकोपनिषद् 2.2/3-4)*। भागवत पुराण के अनुसार ब्रह्मा के चौदह मानस पुत्रों में इन ऋषियों की गणना की गयी है और इन ऋषियों की उत्पत्ति ब्रह्मा के विभिन्न अंगों, जैसे - नाक, कान, त्वचा, मन, बुद्धि आदि से बतलायी गयी है। इन दोनों ग्रंथों को मिलाकर पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है, कि सप्तर्षि तारामण्डल ब्रह्मा की ज्ञानेन्द्रियाँ एवम् कर्मेन्द्रियों की वृत्तियों के नाम हैं। ब्रह्मलोक में स्थित एक खरब के लगभग सूर्यों के समूह का नाम ब्रह्मा है। सूर्यों के समूह को सुविधा के लिए ***'विराट ब्रह्मा'*** कहना उचित होगा, क्योंकि पृथ्वीलोक से सम्बन्धित सूर्य को भी 'ब्रह्मा' कहा जाता है। 'ब्रह्मा' की इन इन्द्रियों के नामों का विवरण ऋषियों के नामों सहित निम्न तालिका में दिया जा रहा है [b]।

क्रम सं.	***ब्रह्मा की इन्द्रियों की वृत्ति***	***ऋषि (तारा) का नाम***
1.	नेत्र	अत्रि
2.	नाक (प्राण)	वशिष्ठ
3.	कान	पुलस्त्य
4.	मुख	अंगिरा
5.	त्वचा	भृगु
6.	मन	मरीचि
7.	अँगूठा (बुद्धि)	दक्ष

सप्तऋषि मण्डल

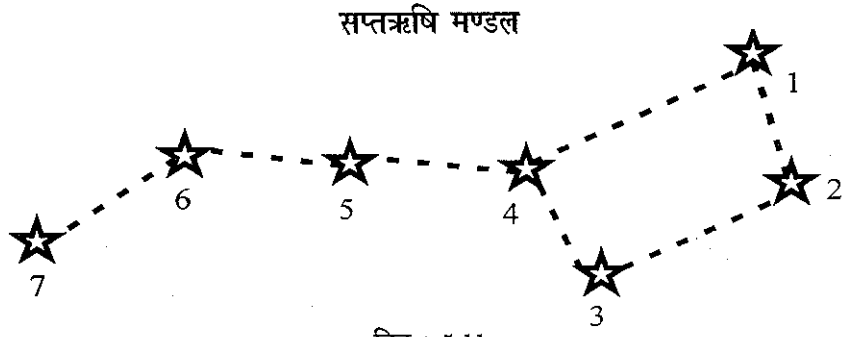

चित्र : 5.11

a ***The seven lokas*** – In the beautiful metaphor, maintaining the general spirit of poetry in the stanza, we must take the word 'Loka' here to mean the sense centres in the intellect. It is known to the scientific world that there are definite nerve centres controlling the sense organs.

(Page-74, Commentary by Swami Chinmayanand on Mundakopnishad)

b *श्रीमद् भागवत महापुराण, प्रथम खण्ड, पन्द्रहवाँ संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि0सं0 2047, पृष्ठ 251-252*

भागवत पुराण के संदर्भ में दिए गये ब्रह्मा के शरीर एवम् वृत्ति से उत्पन्न अन्य मानस पुत्रों के नामों का विवरण निम्न प्रकार से है -

क्रम सं.	***ब्रह्मा के शरीर के उत्पत्ति स्थान अर्थात् वृत्ति***	***ऋषि के नाम***
8.	हाथ (क्रिया वृत्ति)	कृतु
9.	नाभि (जन्म वृत्ति)	पुलह
10.	गोद (गति वृत्ति)	नारद
11.	वैराग्य वृत्ति	सनक
12.	वैराग्य वृत्ति	सनन्दन
13.	वैराग्य वृत्ति	सनातन
14.	वैराग्य वृत्ति	सनत कुमार

ब्रह्मा द्वारा चारों वेदों, उपवेदों तथा सारी सृष्टि का सृजन हुआ तथा वेदव्यास द्वारा इस सम्पूर्ण ज्ञान को लिपिबद्ध किया गया। परन्तु उपरोक्त चर्चा प्रतीकों की व्याख्या तक ही सीमित की गयी है [a]।

पुराणों में वर्णन आता है, कि नारद जी पृथ्वीलोक में बारम्बार आते हैं तथा इस लोक में अनेक प्रकार के प्राणियों को अपने कर्मभोग के कारण कष्ट उठाते देखकर द्रवित होते हैं, अतएव वे ब्रह्मलोक, विष्णुलोक तथा शिवलोक में जाकर त्रिदेवों को पृथ्वीवासियों की व्यथा कथा सुनाते हैं और उनके कष्टों को शमन करने के उपायों को पूछते हैं। तत्पश्चात् पृथ्वीलोक में आकर उन उपायों को ऋषियों को बतलाते हैं। इस प्रकार वे सतत् पृथ्वीलोक के प्राणियों को तीनों लोकों से सम्बद्ध रखते हैं। ***इस प्रक्रिया को यदि आज की भाषा में समझें तो यह कहा जा सकता है, कि नारद जी इन्टरनेट के प्रतीक हैं, जो पृथ्वीवासियों को त्रिदेवों की वैबसाइटों से जोड़ कर रखते हैं तथा त्रिदेवों की वैबसाइटों में निहित ज्ञान पृथ्वीवासियों को उपलब्ध कराते हैं।***

24. भुवन (मनु) :- भारतीय मनीषियों ने काल गणना के क्षेत्र में बहुत ही आश्चर्यजनक खोजें की हैं। उन्होंने काल की सूक्ष्मतम इकाई निमेष से लेकर विशालतम इकाई मनु और ब्रह्म सम्वत् (ब्रह्मायु) तक की गणना की है। बहुत संक्षेप में सूक्ष्मतम इकाई, मनु की इकाई तथा ब्रह्मायु की गणना निम्न प्रकार से है -

***(i)* काल की सूक्ष्मतम इकाई :-**

18 निमेष	=	1 काष्ठा	*मानव की आँख की पलक*
30 काष्ठा	=	1 कला	*के एक बार झपकने की*
30 कला	=	1 मुहूर्त = 2 घटी	*अवधि = 1 निमेष*
30 मुहूर्त (60 घटी)	=	1 अहोरात्र (रात-दिन)	

अर्थात् 24 मिनट = 1 घटी; 2.5 घटी = 1 घंटा; 24 घंटा = 1 दिन-रात

निम्नांकित गणनाओं में पृथ्वीलोक से लेकर आकाशगंगा तक के सभी गतिशील पिण्डों

---

a ब्रह्मा द्वारा रची गयी सृष्टि का विवरण **चतुर्थ सत्र** के अनुच्छेद-7 में 'भारतीयों की दृष्टि में सृष्टि रचना' शीर्षक के अन्तर्गत दिया गया है।

की गतियों को आधार बनाया गया है। इसकी प्रेरणा भागवत पुराण से ली गयी है।

***(ii)* काल की दीर्घ इकाई [a] :-**

30 अहोरात्र (एक माह) = 1 पितृ दिवस

इसमें कृष्ण-पक्ष पितृ दिवस तथा शुक्ल-पक्ष पितृ रात्रि कही जाती है।

12 पितृ दिवस (360 दिन या 1 मानव वर्ष) = 1 देव दिन

इसमें उत्तरायण 'देव दिन' तथा दक्षिणायन 'देव रात्रि' कही जाती है।

ज्योतिर्पिण्डों की गति पर आधारित गणना [b] :- चन्द्रमा द्वारा पृथ्वी का एक चक्र 30 दिनों (एक माह) में तथा पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 12 माह में पूरी करती है। इस प्रकार -

$12 \times 30 = 360$ मानव दिन या 1 मानव वर्ष = 1 देव दिन

360 देव दिन (360 मानव वर्ष) = 1 देव वर्ष

बारह राशियों पर सूर्य का एक चक्र 12 सूर्य माह में।

जब सूर्य के ऐसे 1000 चक्र पूरे हो जाते हैं तब 1 देव युग होता है।

12×1000 देव वर्ष = 1 देव युग =

= $12,000 \times 360 = 43,20,000$ मानव वर्ष

देव युग = चतुर्युग = सतयुग + त्रेता + द्वापर + कलियुग

जब राशियाँ आकाशगंगा के केन्द्र के 1000 चक्र पूरा कर लेती हैं, तब एक महायुग कहलाता है।

यह अवधि ब्रह्मा (हमारे सूर्य) का सम्पूर्ण जीवनकाल है तथा विराट ब्रह्मा का एक दिन कहलाता है। इस अवधि को एक कल्प भी कहा जाता है।

महायुग = $1000 \times 43,20,000$

= 4.32×10^9 मानव वर्ष

एक महायुग = 1 कल्प = हमारे सौरमण्डल की सृष्टि रचना की अवधि = ब्राह्म दिन

= 14 मनवन्तर

एक मनु का कदाचित् अर्थ है, कि हमारी आकाशगंगा द्वारा किसी अव्यक्त केन्द्र की एक परिक्रमा।

इस प्रकार हमारी आकाशगंगा एक कल्प की अवधि में किसी अव्यक्त केन्द्र की 14

---

a उपरोक्त गणना आंशिक रूप से श्रीयुत नन्दलाल दशोरा द्वारा लिखित *'ब्रह्माण्ड और ज्योतिष रहस्य'* पुस्तक के पृष्ठ-184 पर आधारित है।

b ज्योतिर्पिण्डों की गति सम्बन्धी गणनाओं की प्रेरणा *श्रीमद् भागवत महापुराण के प्रथम खण्ड के पृष्ठ 246-247* से ली गयी है। आलेख उद्धृत है। कुछ आँकड़े अनुमान पर आधारित हैं।

"चन्द्रमा आदि ग्रह, अश्विनी आदि नक्षत्र और समस्त तारामण्डल के अधिष्ठाता काल स्वरूप भगवान सूर्य (आकाशगंगा के समस्त सूर्यों से अर्थ सम्भव है) परमाणु से लेकर सम्वत्सर पर्यन्त काल में द्वादश राशि रूप सम्पूर्ण भुवन कोश की निरन्तर परिक्रमा किया करते हैं।" सूर्य, बृहस्पति, सवन, चन्द्रमा और नक्षत्र सम्बन्धी महीनों के भेद से यह वर्ष ही सम्वत्सर, परिवत्सर, इडावत्सर, अनुवत्सर और वत्सर कहा जाता है।

परिक्रमाएं पूरी करती है।

भारतीय ज्योतिषियों ने ***'यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'*** सिद्धान्त के आधार पर मानव की आयु— की भाँति ही ब्रह्मा की आयु को भी दिनों, महीनों तथा सौ वर्षों में वर्गीकृत किया है। क्योंकि एक कल्प की कालावधि ब्रह्मा का एक दिन होता है, तो तीस दिनों का एक माह बनता है, अतः तीस कल्पों का भी नामकरण किया गया है। तीस कल्पों [a] का नाम निम्न प्रकार से है -

1. श्वेत वराह	2. नीला लोहित	3. वामदेव	4. राथन्तर
5. रावण	6. प्राण	7. वृहत्	8. कन्दर्भ
9. सत्य	10. ईशान	11. व्यान	12. सारस्वत
13. उदान	14. गरुड़	15. कूर्म	

उपरोक्त पन्द्रह कल्प मास के शुक्ल पक्ष के दिन कहे गये हैं। अन्तिम कल्प 'पूर्ण पूर्णिमा' है। तत्पश्चात् माह के निम्न 15 दिन कृष्ण पक्षीय कल्प कहे गये हैं -

1. नारसिंह	2. समान	3. आग्नेय	4. सोम
5. मानव	6. तत्पुरुष	7. वैकुण्ठ	8. लक्ष्मी
9. सावित्री	10. घोर	11. वराह	12. वैराज
13. गौरी	14. माहेश्वर	15. पितृकल्प	

पितृ कल्प माह की अमावस्या का दिन है। भारतीय गणनानुसार अब तक ऐसे 600 मास (50 वर्ष) ब्रह्मायु के व्यतीत हो चुके हैं तथा वर्तमान कल्प 601वें मास का प्रथम 'श्वेत वराह' कल्प है [a]।

क्योंकि बारह माह बारम्बार दोहराए जाते हैं, जिससे वर्षों की अवधि बनती है, अतएव इन्हीं नामों वाले कल्पों की बारम्बार की आवृत्ति से ***'विराट ब्रह्मा'*** की कुल सौ वर्षों की आयु पूर्ण हो जाती है और तब पूरी आकाशगंगा का विनाश हो जाता है। उपरोक्त नामों से लगता है, कि प्रत्येक कल्प के नाम विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों के सूचक हैं, जो प्रतीकों की भाषा में लिखे गये हैं, जिनके अर्थों को खोजने की आवश्यकता है।

(iii) **विराट ब्रह्मा की आयु** :- ब्राह्म रात्रि (प्रलय) की कालावधि भी हमारे सौरमण्डल की रचना की कालावधि (एक कल्प) के बराबर मानी गयी है।

अतएव ब्राह्म दिन एवम् रात्रि	=	$2 \times 4.32 \times 10^9$ मानव वर्ष हुई।
ब्राह्म मास	=	$30 \times 4.32 \times 10^9 \times 2$
	=	$60 \times 4.32 \times 10^9$ मानव वर्ष
ब्राह्म वर्ष	=	$12 \times 60 \times 4.32 \times 10^9$ मानव वर्ष
	=	$31,10.40 \times 10^9$ मानव वर्ष
[b] 100 ब्राह्म वर्ष	=	$100 \times 31,10.40 \times 10^9$ मानव वर्ष
विराट ब्रह्मा की आयु	=	$31,10,40 \times 10^9$ मानव वर्ष

---

a उपरोक्त नामों का विवरण *'ब्रह्माण्ड और ज्योतिष रहस्य'* पुस्तक के पृष्ठ-185 से लिया गया है, लेखक-श्री नन्दलाल दशोरा, उदयपुर (राज0)।

b ब्रह्मा द्वारा रची गयी सृष्टि का विवरण चतुर्थ सत्र में "भारतीयों की दृष्टि में सृष्टि रचना" शीर्षक के अन्तर्गत दिया गया है।

(iv) विराट ब्रह्मा - आकाशगंगा के सभी सूर्यों (ब्रह्माओं) के संयुक्त नाम का द्योतक है। आकाशगंगा में लगभग एक खरब सूर्य (ब्रह्मा) केन्द्र का निरन्तर चक्कर लगा रहे हैं।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार आज तक हमारे सूर्य (ब्रह्मा) का अर्ध जीवनकाल लगभग 4.5×10^9 मानव वर्ष व्यतीत हो चुका है, इस प्रकार हमारे सूर्य (ब्रह्मा) का कुल जीवनकाल 9×10^9 मानव वर्ष बनता है। सम्भव है, कि ऊपर गणित की गयी कालावधि 4.32×10^9 मानव वर्ष, मानव जीवन की पृथ्वीलोक पर प्रभावी अवधि हो। सूर्य के कुल जीवनकाल 9×10^9 मानव वर्षों में से शेष समयावधि सृष्टि रचना की तैयारी तथा विध्वंस में व्यतीत होती हो।

मानव की उत्पत्ति से पूर्व के संक्रमण काल में अनेक प्रकार के प्राणी उत्पन्न होते रहते हैं तथा उनका विध्वंस होता रहता है। जैसे कि आज विज्ञान ने यह पता लगाया है, कि लगभग पैंसठ (65) करोड़ वर्ष पूर्व डायनोसोर नाम की पशु प्रजाति का सम्पूर्ण विनाश हो गया था। यह जानकारी डायनोसोर के कंकालों के अध्ययन से प्राप्त हुई है।

हमारे ब्रह्मा (सूर्य) के जीवनकाल के गणित से यह भी अर्थ निकलता है, कि हमारा सूर्य प्रत्येक ब्राह्म रात्रि (प्रलय) के अन्त में पुनः-पुनः जन्म लेगा और उसी प्रकार पुनः नष्ट होगा। विज्ञान के अनुसार यदि सूर्य की आयु नौ अरब वर्ष मानें और उतना ही समय उसकी प्रलय अवस्था का भी मान लें, तो हमारे सूर्य को यदि आकाशगंगा की मृत्यु के साथ ही लय होना हो, तो उसे $\frac{311040 \times 10^7}{18 \times 10^9} = 17{,}280$ (लगभग 18,000) बार मरना व जन्म लेना पड़ेगा।

***(v)* मनु के स्वरूप** :- जिस प्रकार चन्द्रमा पृथ्वी की, पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करता है तथा सूर्य एवम् राशियाँ आकाशगंगा की परिक्रमा करती हैं और इन ज्योतियों की परिक्रमाओं के आधार पर हमारी आकाशगंगा का जीवनकाल गणित किया गया है, उसी प्रकार ऐसा लगता है, कि चौदह मनुओं की गणित हमारी आकाशगंगा द्वारा अन्य सभी आकाशगंगाओं के साथ किसी अव्यक्त केन्द्र के चौदह परिक्रमाओं पर की गयी है। एक परिक्रमा को एक भुवन (मनु) कहा गया प्रतीत होता है, इसीलिए हर परिक्रमा के पश्चात् प्रत्येक मनु का अलग-अलग नाम दिया गया है, जैसे - स्वायंभुव, स्वारोचिष, चाक्षुष आदि। चौदह मनुओं के नाम नीचे दिए जा रहे हैं [b] -

1. स्वायंभुव	4. तामस	7. वैवश्वत	10. ब्रह्म सावर्णि	13. दैव सावर्णि
2. स्वारोचिष	5. रैवत	8. सावर्णि	11. धर्म सावर्णि	14. इन्द्र सावर्णि
3. उत्तम	6. चाक्षुष	9. दक्ष सावर्णि	12. रुद्र सावर्णि	

---

a *'शरदः शतम् एवम् यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'* सिद्धान्त के आधार पर विराट ब्रह्मा (ब्राह्म) की आयु भी 100 (सौ) वर्षों की मानी गयी है।

b संदर्भ : पृष्ठ-186 *'ब्रह्माण्ड और ज्योतिष रहस्य'*, लेखक-श्री नन्दलाल दशोरा।

क्योंकि 14 मनु = 1000 चतुर्युग = $\frac{1000}{14}$

अतएव 1 मनु = $71\frac{3}{7}$ चतुर्युग

अथवा = $71\frac{3}{7} \times 43,20,000$ मानव वर्ष

= 30,85,71,500 मानव वर्ष

ऐसा प्रतीत होता है, कि उपरोक्त मनुओं की कालावधि में मानव सृष्टि की प्रवृत्तियाँ अलग-अलग प्रकार की होती हैं, इसीलिए इन मनुओं के नाम प्रवृत्ति सूचक हैं। प्रवृत्ति सूचक होने के अन्य उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

***(a)* बारह सूर्य :-** बारह मास के सूर्य बारह राशियों पर विचरण करते हैं, तो उन सूर्यों की गति से मानवों की प्रवृत्तियों में परिवर्तन होता रहता है। प्रवृत्तियों के अतिरिक्त मानवों के विभिन्न अंगों पर अलग-अलग प्रकार का प्रभाव पड़ता है तथा उनमें रोगोत्पत्ति भी होती है। इन दुष्प्रभावों से बचने के लिए तरह-तरह के योगासन, उपवास, व्रत, दान आदि की व्यवस्था बतलायी गयी है। सूर्योपासना, ध्यान व जप आदि के विस्तृत विधान सुझाए गये हैं। अर्जुन द्वारा प्रयुक्त सूर्यों के बारह नाम निम्न प्रकार से हैं :-

1. मित्र	4. भानु	7. हिरण्यगर्भ	10. सविता
2. रवि	5. खग	8. मारीचि	11. अर्क
3. सूर्य	6. पूषन्	9. आदित्य	12. भास्कर

उपरोक्त नामों का जप तथा अंग विशेष पर ध्यान करने से सूर्य द्वारा उत्पन्न रोगों का शमन हो सकता है।

***(b)* कलियुग :-** जब सप्तर्षि 'मघा' नक्षत्र पर विचरण करते हैं, तभी कलियुग का प्रारम्भ होता है अर्थात् पृथ्वी पर मानवों की प्रवृत्ति में अधर्म के प्रति अधिक झुकाव होने लगता है। जिस समय सप्तर्षि मघा नक्षत्र से चलकर पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जा चुके होंगे, उस समय राजा नन्द का राज्य रहेगा। तभी से कलियुग की वृद्धि शुरू होगी [a]।

***(c)* सतयुग :-** चन्द्रमा, सूर्य और बृहस्पति एक ही समय, एक ही साथ पुष्य नक्षत्र के प्रथम पल में प्रवेश करते हैं तथा एक ही राशि पर आते हैं, तब सतयुग का प्रारम्भ होता है [b]। अर्थात् तब मानवों की प्रवृत्ति धर्म की ओर अग्रसर होने लगती है।

उपरोक्त उदाहरण, मात्र यह बतलाने हेतु लिखे गये हैं, कि ***'मनु'*** एक काल गणना की इकाई है तथा उनकी अलग-अलग परिक्रमाओं के अनुसार मानवों के सोचने-समझने में परिवर्तन आता रहता है, परिणामस्वरूप प्रत्येक मनवन्तर में इन्द्र भी बदल जाता है। ***'इन्द्र' भोग विलास के प्रतीक देवता हैं।*** इसका अर्थ यह लगता है, कि प्रत्येक मनवन्तर में भोग

---

a *श्रीमद् भागवत महापुराण, द्वितीय खण्ड, पन्द्रहवाँ संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि0सं0 2047, पृष्ठ-911*

b *श्रीमद् भागवत महापुराण, द्वितीय खण्ड, पन्द्रहवाँ संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि0सं0 2047, पृष्ठ-910*

विलास के साधन भिन्न-भिन्न प्रकार तथा विभिन्न स्तर के हो सकते हैं, अतः उस समयावधि में नवीन प्रकार के सुख साधनों का विकास होना स्वाभाविक है। परिणामस्वरूप सभ्यताएं बनती तथा नष्ट होती रहती हैं। आज यह बात सर्वविदित है, कि कुछ सहस्र वर्ष पूर्व हड़प्पा एवम् मोहनजोदड़ो, मिश्र, बेबीलोनिया, सुमेरिया, यूनान तथा रोमन सभ्यताओं का अभ्युदय हुआ था, जो काल-कवलित हो चुकी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सभ्यताओं का उत्कर्ष एवम् अपकर्ष कुछ सहस्र वर्षों के अन्तराल में होता रहता है, परिणामस्वरूप मानव को इतिहास की सीमित जानकारी ही रहती है। अतएव मानव समाज को प्रेरणा प्रदान करने हेतु दो शिक्षाप्रद महाकाव्यों रामायण तथा महाभारत की रचना की गयी, जिससे समाज समय-समय पर इन सार्वकालिक मानक (Standard code of conduct) इतिहास ग्रंथों के आलोक में अपनी समस्याओं का समाधान खोज सके।

इन दोनों ग्रंथों से यह शिक्षा मिलती है, कि समाज में जब-जब अहंकार, काम एवम् लोभ विशेषकर व्यभिचार प्रवृत्ति सीमा से अधिक बढ़ जाती है, तब-तब उस समाज का विनाश हो जाता है, अहंकारी रावण द्वारा सीताहरण तथा दुर्योधन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण किया जाना, प्रतीकात्मक भाषा में व्यभिचार प्रवृत्ति की पराकाष्ठा के साहित्यिक प्रस्तुतीकरण हैं।

25. आसुरी प्रवृत्तियाँ :- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आदि तामसिक प्रवृत्तियों का चित्रण असुरों के रूप में किया गया है। **इन प्रवृत्तियों के मानवी स्वरूप अति भयानक तथा हिंसक दिखलाए गये हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है, कि मूर्तिकरण के सिद्धान्त के पीछे उसकी प्रवृत्ति अर्थात् गुणों का चित्रांकन है, न कि अन्य कोई और सोच।** सामान्य विद्यार्थियों की सुविधा के लिए गुण आधारित मूर्तिकरण का विशाल साहित्य पौराणिकों ने तैयार किया था। इसी साहित्य के बल पर वैदिक धर्म आज तक सुरक्षित है।

सिंह वाहनी दुर्गा माँ

चित्र : 5.12

26-27. शक्ति (Energy) एवम् ईश्वर :- किसी भी कार्य को करने के लिए शक्ति (Energy) की आवश्यकता होती है, जैसे इंजन चलाने हेतु भाप अथवा विद्युत की आवश्यकता होती है। परन्तु इस इंजन का युक्ति संगत निर्माण तथा उसमें शक्ति को प्रवाहित करने की व्यवस्था के लिए किसी बुद्धि बल की आवश्यकता होती है अर्थात् ज्ञान की, तभी इंजन बनेगा एवम् चलेगा तथा कार्य सम्पादन करेगा। परन्तु यह ज्ञान किसी चैतन्य सत्ता में ही

हो सकता है, ***उस चैतन्य सत्ता को ही ईश्वर, परमात्मा अथवा चैतन्य बल कहा गया है।***

सम्पूर्ण सृष्टि में विज्ञान चुम्बकीय विद्युत तरंगों को सृष्टि निर्माण का उपादान कारण (Building Block) मानता है। भारतीयों ने उसे अम्बे (माँ) की संज्ञा दी तथा प्रतीक रूप में सिंहवाहिनी, अष्टभुजी, अस्त्र-शस्त्रधारी स्त्री रूपा माना, परन्तु वह ज्ञानबल जिससे वह उपादान भौतिक पदार्थ योजनापूर्वक क्रियाशील हो सका, ***वही राम हैं एवम् वही कृष्ण हैं, जो प्रकाश और आकर्षण जैसे गुणों से पूर्ण हैं और चुम्बकीय विद्युत तरंगों (माँ अम्बे) की पृष्ठभूमि में अव्यक्त रहकर माँ अम्बे को क्रियाशील रहने के लिए प्रेरित करते हैं और इस प्रकार सृष्टि रचना, पालन एवम् संहार का कार्य निरन्तर सुचारु रूप से सम्पादित होता रहता है। एक ही चैतन्य परमात्म शक्ति को भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रवृत्ति आधारित कार्य सम्पादन की भिन्नता के कारण कहीं ब्रह्म, महेश्वर, ब्रह्मा, वासुदेव, शंकर अथवा इन्द्र, आदि नामों से पुकारा गया है। इसी भाव को वेद में इस प्रकार कहा गया है-"एको देवो, सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" अर्थात् परमात्म देव[a] तो एक ही हैं, परन्तु कार्य सम्पादन की भिन्नता के कारण उनको अनेक नामों से पुकारा जाता है।***

यह सब ज्ञान एक लम्बे अर्से से हम भूल चुके हैं, अतएव उपरोक्त विश्लेषण अटपटे लगते हैं। आधुनिक विज्ञान द्वारा आविष्कृत यन्त्रों ने हमारे पूर्वकालिक ज्ञान के विश्लेषण की क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि की है। आज इस वैज्ञानिक विश्लेषण के प्रकाश में भारतीयों को अपने आत्मविश्वास को जगाना है, ताकि मजहबों के चक्रव्यूह को तोड़कर सारे विश्व में मानवधर्म की पताका लहरायी जा सके।

समग्र दृष्टि :- भारतीय मनीषियों ने सहस्रों वर्षों की खोजबीन के पश्चात् जीवन के हर क्षेत्र को समग्रता से देखा, परखा और तब बड़े-बड़े निर्णय लिए, परन्तु संकुचित दृष्टि वाले तथाकथित आधुनिक कहलाने वाले लोग इस पूर्णता को समझने में अक्षम हैं, अतएव समाज में भ्रान्तियाँ फैल रही हैं जिन्हें यथाशीघ्र दूर किए जाने की परम आवश्यकता है, जिससे मानवता सुरक्षित रह सके।

हरिः ॐ तत् सत् !

---

a प्रतीकों की संरचना के महत्व के सम्बन्ध में विश्व प्रसिद्ध पुस्तक Tao of Physics में डॉ फ्रिटजोफ कापरा द्वारा व्यक्त किये गये विचारों को पुस्तक के भाग-2 के प्रारम्भ में उद्धृत किया गया है, जो अवश्य पठनीय है।